ISSN 2277-7660

पर्यावरण संरक्षण को समर्पित एक अनूठी पारिवारिक, सामाजिक, साहित्यिक एवं आध्यात्मिक मासिक पत्रिका

अमर ज्योति

वर्ष : 76 मई, 2025 अंक : 5 मूल्य : 150 रु. (वार्षिक)

प्रकाशक :

बिश्नोई सभा, हिसार

संपादक

डॉ. माया बिश्नोई

व्यवस्थापक

रामनिवास सिहाग

दूरभाष : 81681-78429

94670-90729

कार्यालय पता :

'अमर ज्योति'

श्री बिश्नोई मन्दिर

हिसार - 125 001 (हरियाणा)

email: editoramarjyotipatrika@gmail.com
editor@amarjyotipatrika.com

Website : http://amarjyotipatrika.com

सभा कार्यालय दूरभाष :

फोन : 01662-225804

इस पत्रिका में उल्लेखित सभी पद (व्यवस्थापक के अतिरिक्त) अवैतनिक एवं निष्काम सेवार्थ हैं।

सदस्यता शुल्क :

वार्षिक : ₹ 150

25 वर्ष : ₹ 1300

"अमर ज्योति में प्रकाशित लेख एवं विचार लेखकों के वैयक्तिक हैं। संपादक का इनसे सहमत या असहमत होना आवश्यक नहीं है। लेख संबंधी आपत्तियों हेतु सीधे लेखक से सम्पर्क करें"

सभी विवादों का न्यायक्षेत्र हिसार न्यायालय होगा।

अमर ज्योति
1950
श्री बिश्नोई मन्दिर, हिसार

'अमर ज्योति' का ज्ञान दीप अपने घर आँगन में जलाइये।

विषय अनुक्रमणिका

विषय		पृष्ठ
सबद-29		3
कुछ प्रश्न	*सुमित सुभाष थापन*	6
संपादकीय		7
साखी		8
रतन काया सोभंति लाभै	*आचार्य कृष्णानन्द*	9
जुग जागो जूग जाग पिरांणी	*चूनाराम मांझू*	12
कविता: शक्ति साधना	*हरि ओ३म*	14
सबदवाणी में गोरखनाथ एवं अन्य नाथ योगी	*डॉ. कृष्णलाल बिश्नोई*	15
आंतरिक और बाह्य शुद्धि	*जयकिशन सियाक*	18
बधाई संदेश		21
जांभोजी ने जाट को सुनाया 15वाँ सबद	*पृथ्वीसिंह बैनीवाल*	22
मनुष्य जीवन दुर्लभ है	*नारायण राम जांगू*	23
कविता: मित्र	*पीयूष बिश्नोई*	24
श्री जम्भेश्वर वर्णमाला	*तेजमाल खिलेरी*	25
कविता: चिंता या टेंशन	*संगीता बिश्नोई*	26
लघु कथा: लोभ व्याधि है		26
जीव-जन्तु व वृक्ष संरक्षण की ग्रीष्मकालीन...	*दिलसुख राम*	27
बिश्नोई लोकगीत: बिश्नोई संस्कारों के लोकगीतों में संस्कृति चित्रण	*डॉ. बनवारी लाल सहू*	29
संस्कार	*श्रीकृष्ण बिश्नोई*	32
ग्रीष्म ऋतु में बिश्नोई जीवन शैली अनुकूल....	*डॉ. राजा राम*	33
हवन कुंड और नारियल जलाने की परंपरा....	*सुमन बिश्नोई*	35
मंत्र सिद्धि:मंत्रों को जागृत करने की प्रभावी विधि	*सुनीता तलवाड*	36
इसलिए नहीं रूक पा रही शिकार की घटनाएँ	*रामकिशन डेलू*	37
सबदवाणी सूक्तियाँ	*बनवारी लाल ईशरवाल*	38
दृष्टि दे तू ज्ञान की	*पंकज कुमार बिश्नोई*	39
...पर दोषी कौन?	*हरि सिंह*	40
बिश्नोई युवकों को विज्ञान की शिक्षा....	*राघव*	41

सबद-29

दोहा

शेख मनोहर परचियों, मन में आयो सांच।
देव तणौं पाऐं लग्यो, निरमल गुरु की वाच॥

दोहा

एक समै हरषाय, देवजी बात चलाई।
कनोज कालपी शहर, समंदा पार की कह समझाई।
कहै हजूरी लोक, देवजी थे कद गया।
म्हे दीठा बीकाणै देश, साथरी पर थया।
आयो जम्भ इलोल, शब्द रूप उच्चरया।
हरि हां शब्द हमारो रूप, शब्द सब विश्व करया॥

एक समय जम्भदेवजी संत साथरियों सहित सम्भराथल पर विराजमान थे। उसी समय बिना किसी शंका प्रश्न पूछे ही देवजी ने कन्नौज-कालपी शहर तथा समुद्र पार की वार्ता चलाई। साथरियाँ भक्त जन कहने लगे- कि आप तो यहाँ बीकानेर देश में सम्भराथल पर ही विराजमान रहते हैं। समुद्र पार देशों में कब गये थे। तब देवजी को इलोल यानि उमंग आयी, जिससे स्वतः सबदोच्चारण हुआ। यह इलोल सागर शब्द विशेष आनन्द की आस्था में कहा गया है। इसलिये इसका पठन गायन श्रवण करने से विशेष आनन्द की प्राप्ति होती है।

गुरु जाम्भोजी ने बतलाया कि मैं इस शरीर रूप से भले ही यहाँ पर तुम्हारे पास विद्यमान हूँ। इन शब्दों द्वारा मैं जिस देश में जाता हूँ उनको उन्हीं की भाषा में ज्ञान देता हूँ। शब्द रूप से मेरा विस्तार हो चुका है। प्रहलाद पन्थ के बिछुड़े हुऐ जीवों को खोज लिया है। उन्हें सद्मार्ग का अनुयायी बना दिया है। शब्द रूप परब्रह्म होते हुऐ भी स्वकीय माया से भिन्न भिन्न शरीरों को धारण करता हूँ। इस समय मैंने यही किया है।

सबद-29 'इलोल सागर'

गुरु के शब्द असंख्य प्रबोधी, खार समंद परीलो।
खार समंद परै परै रे, चौखण्ड खारूं, पहला अन्त न पारूं।

भावार्थ- 'स तु सर्वेषां गुरु कालेनानवच्छेदात्' 'योग दर्शन' वह परम पिता परमात्मा ही सभी का गुरु है तथा काल से परे है। ऐसे सतगुरु के शब्द व्यर्थ नहीं हुआ करते, वे तो असंख्य जनों को प्रबोध-ज्ञान कराने वाले होते हैं। गुरु जाम्भोजी कहते हैं कि इन मेरे शब्दों ने असंख्य जनों को ज्ञानी बनाया है। इस जम्बू दीप भारत खण्ड से बाहर खार समुद्रों से परे भी तथा उनसे भी आगे अनेकानेक देशों में मेरे इन शब्दों की गुंजार पहुँची है। इन चारों खण्ड समुद्रों से पार तो इस समय लोगों को शुद्ध सात्विक बनाया है। अब से पूर्व भी समय-समय पर अनेकों शरीर धारण करके लोगों को चेताया है। जिसकी कोई गिनती भी नहीं है।

अनन्त कोड़ गुरु की दावण बिलंबी, करणी साच तरीलो।
सांझे जमो सवेरे थापण, गुरु की नाथ डरीलो॥

सृष्टि के प्रारम्भ से लेकर अब तक अनन्त करोड़ प्राणियों ने गुरु की दावण यानि नियमबद्ध जीवन स्वीकार किया है और सत्य धर्म मय जीवन स्वीकार करके संसार सागर से पार उतर गये। सतगुरु ने उन्हें उद्दण्डता से निवृत करके सांय समय जागरण सत्संग तथा प्रातःकाल कलश स्थापना करके हवन-पाहल रूपी नाथ पहनायी। वही धर्म साधक नाथ जीवन को संयमित करती है। वे लोग सदा ही गुरु के नियमों पर तत्पर रहकर पापमय जीवन से डरते हैं।

भगवी टोपी थलसिर आयो, हेत मिलाण करीलो।
अम्बाराय बधाई बाजै, हृदय हरि सिंवरीलो।

वही सतगुरु जो देश देशान्तरों में भ्रमण करके अनन्त करोड़ों को पार उतारने वाले है। यहाँ सम्भराथल पर भगवीं टोपी पहन कर आये हैं। यदि कोई अपना हित चाहता है तो मिलाप कर सकता है। जो भी मिलाप करेगा वह निश्चित ही हृदय में हरि विष्णु परमात्मा का स्मरण करता हुआ आनन्दमय लोक को प्राप्त करेगा। जब वह वहाँ पहुँचेगा तो देवता लोग स्वागत सहित अपने यहाँ वास देंगे।

कृष्ण मया चौखण्ड कृषाणी, जम्बू दीप चरीलो।
जम्बू दीप ऐसो चर आयो, इसकन्दर चेतायो।
मान्यो शील हकीकत जाग्यो, हक की रोजी धायों।

परमात्मा श्री कृष्ण की त्रिगुणात्मिका माया का ही यह दृश्य अदृश्य जगत रूप है। एक बीज रूपी माया का यह जगत रूप पसारा है। किन्तु इसके कृषक स्वयं परमात्मा है। श्री देवजी कहते हैं कि इस विशाल सृष्टि के अन्दर भ्रमण करते हुऐ भी मैं यहाँ विशेष रूप में ही

विचरण करता हूँ। तथा इसमें विचरण करते हुऐ दिल्ली के बादशाह सिकन्दर को चेताया है। उसे अधर्म मार्ग से निवृत्त करके शील व हक की कमाई करने का उपदेश दिया है। वह बादशाह होते हुए भी यह स्वीकार किया है। अब वह हक की कमाई करके ही अपना जीवन निर्वाह करता है।

ऊनथ नाथ कुपह का पोहमा आण्या, पोह का धुर पहुंचाया।

जो लोग अति उदण्ड थे उनको तो सज्जन बनाया तथा जो लोग कुमार्ग पर चलते थे उनको सुमार्ग में प्रवृत करवाया तथा जो लोग सुमार्ग में चलते थे अपनी क्रिया कर्म में पक्के थे उनको परम पद की प्राप्ति करवा दी, यही मेरा परम कर्त्तव्य है, यह मैने ठीक से सम्पूर्ण किया है और आगे भी करूँगा।

मोरे धरती ध्यान वनस्पति वासों, ओजूं मण्डल छायों। गीन्दूं मेर पगाणै परबत, मनसा सोड़ तुलायो॥

गुरु जाम्भोजी अपने भ्रमण की व्यापकता को दर्शाते हैं कि मेरे इस सर्वत्र व्यापक रूप में यह धारण शक्ति सम्पन्ना धरती ही ध्यान है। किसी वस्तु विशेष को निरंतर चित में रखने को ही ध्यान कहते है तथा धरती ही निरंतर सभी जड़-चेतन प्राणियों को धारण करती है। इसलिये मेरा ध्यान तो धरती की तरह अडिग है अर्थात् धरती रूप ही है। जिस प्रकार इस धरती से ही भोजन प्राप्त करके वनस्पति धरती के आधार पर खड़े है और कण-कण में विद्यमान है। उसी प्रकार से श्री देवजी कहते हैं कि मैं भी ध्यान रूप से अडिग होकर वनस्पति रूप में सर्वत्र व्यापक हूँ तथा वनस्पति की तरह परोपकारी भी हूँ। सत्य सनातन रूप से सम्पूर्ण मण्डल में छाया हुआ हूँ। उसी सत्य के बल पर यह मण्डल टिका हुआ है।

सुमेरू पर्वत ही मेरा तकिया है तथा अन्य सभी छोटे-मोटे पहाड़ पैरों के नीचे ही रहने वाले छोटे गद्दे है अर्थात् जब मेरा शयन होता है तो वह भी इस पार से लेकर उस पार तक सम्पूर्ण सृष्टि को नीचे दबाकर ही होता है। मनसा-इच्छा ही मेरी सोड़ है। उसी सोड़ को ओढ़कर जब मैं सोता हूँ तो इन जीवों को कर्म करने की पूरी छूट मिल जाती है। उस समय यह संसार अनेकानेक वासनाओं से परस्पर तुल जाता है। अनेक व्यक्तियों की परस्पर वासनाएँ संघर्ष पैदा करती है, स्नेह पैदा करती है, वासना पूर्ति के लिये मानव कार्यरत होता है। जिससे इस संसार की उतरोतर वृद्धि होती है। सूर्य, चन्द्र, पृथ्वी आदि अनेक लोक भी परमात्मा की इच्छा से ही एक-दूसरों के आकर्षण से तृप्त हुए है इसलिये अपने अपने स्थान में स्थित है।

ऐ जुग चार छतीसा और छतीसां, आश्रा बहै अंधारी, म्हे तो खड़ा बिहायो।

सत्ययुग, त्रेतायुग, द्वापरयुग और कलयुग ये चार युग बीत गये तथा इसी प्रकार से चार युग नौ बार इससे पहले बीत चुके हैं तथा इनसे पूर्व भी नौ बार ये चार युग बीत चुके, अर्थात् दो बार छत्तीस युग बीत चुके हैं ये सभी मेरे परमात्मा के आश्रय से ही व्यतीत हुआ है। उससे पूर्व तो अन्धकार ही था। सूर्य आदि की उत्पत्ति भी नहीं हुई थी। तब तो चेतन ब्रह्म रूप में ही स्थित था। यह मैंने व्यतीत होते हुऐ देखा है तो फिर मेरे भ्रमण के बारे में क्या पूछते हो।

तेतीसां की बरग बहां म्हे, बारा काजै आयो। बारा थाप घणा न ठाहर मतांतो डीले डीले कोड़ रचायो, म्हे ऊंचै मण्डल का रायों॥

सतयुग में प्रह्लाद भक्त के समय में तेतीस करोड़ देव-मानवों का उद्धार करने के लिये भी मैंने ही नृसिंह रूप धारण किया था। उसको दैत्यों के त्रास से मुक्ति दिलवाई थी। सतयुग में तो केवल पाँच करोड़, त्रेता में सात, द्वापर में नौ करोड़ का ही उद्धार हो सका, अब कलयुग में उनसे बचे हुऐ बारह कोटि जीवों का कल्याण करने के लिये यहाँ पर मेरा आगमन हुआ है। इन बारह कोटि जीवों का उद्धार करके ज्यादा दिन नहीं ठहरूँगा। यहाँ पर आने का मुख्य प्रयोजन प्रह्लाद पंथी जीवों का उद्धार करना ही है। यदि मैं चाहूँ तो प्रत्येक शरीर धारी जीवात्मा में परमात्मा के प्रति तथा शुभ कार्य के प्रति कोड-प्रेम भाव पैदा कर सकता हूँ। कुछ लोग तो अब तक मुक्ति प्राप्ति की योग्यता भी नहीं रखते। हम तो सर्वोच्च मण्डल ब्रह्मलोक के राजा हैं। असंभव को भी संभव कर देते हैं।

समन्द बिरोल्यो वासग नेतो, मेर मथाणी थायों। संसा अर्जुन मारयो कारज सारयो, जद म्हे रहंस दमामा वायो।

समयानुसार हमने और भी अनेक कार्य किये हैं जैसे- जब देव दानवों ने मिलकर समुद्र को बिलोया था तब हमारी आज्ञा से वासुकी नाग का नेता-रस्सी बनायी थी और सुमेरू पर्वत की मथानी बनायी थी। यह सभी सामान जुटाने पर भी उनका कार्य सिद्ध नहीं हो सका तो कछुवे का रूप धारण करके उनका कार्य सिद्ध किया था। परशुराम का रूप धारण करके मुझे ही दुष्ट संहस्रार्जुन जैसे क्षत्रियों का विनाश करके पृथ्वी के भार को हल्का करना पड़ा था। उस समय मैने ही दुष्ट क्षत्रियों पर ब्राह्मण की विजय का यह रहस्यमय डंका बजाया था।

फैरी सीत लई जद लंका, तद म्हे ऊथे थायो।

दशसिर का दश मस्तक छेद्या, बाण भला निरतायो।

त्रेता युग में जब राम रूप हो करके दशसिर रावण के दशों सिरों को छेदन अच्छे अच्छे नुकीले बाणों द्वारा किया। उस समय दोनो ओर से बाणों का महान नृत्य हुआ था। उन्हीं बाणों द्वारा रावण को मार करके सीता को वापिस लाये तथा लंका को अपने अधीन किया था। उस समय कुछ समय के लिये मुझे लंका में ही रहना पड़ा था।

म्हे खोजी थापण होजी नाही, लह लह खेलत डायों।

हम खोज करने वाले सच्चे पारखी हैं। कहीं भी भूल से गलत निर्णय नहीं लेते हैं। समय-समय पर अनेक लोगों को पहले तो उन्हें अत्याचार करने का पूरा मौका देते हैं बाद में खेल के मैदान में आमन्त्रित करके जड़मूल से ही उखाड़ देते हैं। हमारे लिये तो यह एक प्रकार का खेल ही है। दुष्टों का विनाश करते समय भी हम निर्दोष ही बने रहते हैं।

कंसा सुर सूं जूवै रमिया, सहजै नन्द हरायो।

इसी प्रकार द्वापर में भी कंस असुर के साथ मैंने वैसा ही खेल किया था। बिना खेल किये आनन्द नहीं आता है। दुनिया वाले उन्हें सच्चा मान लेते हैं। उसी प्रकार से पहले तो मैं नन्दजी के घर पर मक्खन खाकर बड़ा हुआ। गऊवें चराई, बंशी बजाई तथा बाद में वृन्दावन गोकुल छोड़कर मथुरा जा बसा फिर वापिस लौटकर देखा तक नहीं। प्रथम तो नन्द जी को अति प्रसन्नता प्रदान की किन्तु बाद में दु:खी करके मैंने ही हरा दिया।

कूंत कंवारी कर्ण समानों, तिहिं का पोह पोह पड़दा छायो।

उसी समय जब मैं कृष्ण के रूप में था तब कुमारी कन्या कुन्ती के ऋषि वरदान से सूर्यदेव की परछाया रूप कर्ण जैसा बलवान दानी बालक जन्मा था। किन्तु कुन्ती जिन्हें समाज के भय से स्वीकार नहीं कर सकी थी तब मैंने ही पर्दे को हमेशा इस घटना पर डालकर रखा था। इस रहस्य का पता कर्ण की मृत्यु पर्यन्त किसी को भी नहीं लग सका था। यह असंभव बात भी संभव करके दिखायी था। अब आगे दूसरा पर्दा बतलाते है।

पाहे लाख मजीठी पाखों, बनफल राता पीझूं पाणी के रंग धायो।

तेपण चाखन चाख्या भाख न भाख्या,जोय जोय लियो फल फल केर रसायो।

गुरु जम्भेश्वर जी कहते हैं- कर्ण की घटना को तो पर्दे में छिपा दिया था। किन्तु अब कलयुग में कुछ लोग वैसे ही तरह तरह के वेश बनाकर अपने वास्तविक जीवन पर पर्दा डालना चाहते हैं। जैसे लाख की चूड़ियाँ बनने से पूर्व अवस्था में सौन्दर्यमय नहीं होती है किन्तु मजीठ रंग चढ़ जाने पर पूर्व का रूप ढ़क जाता है और लाल वर्ण वाली हो जाती है। मरुभूमि में होने वाला जाल वृक्ष का फल भी गर्मी के मौसम में पकता है। पकने से पूर्व वह भी हरे रंग का होता है, पककर के लाल रंग धारण कर लेता है। जाल वही है किन्तु पककर लाल रंग का हो जाता है। उसी प्रकार से मरुभूमि में होने वाला केर का पेड़ उसका फल भी पकने से पूर्व हरे रंग का तथा कड़वा ही होता है वही पककर लाल वर्ण वाला हो जाता है तथा कुछ मीठापन भी आ जाता है। ये सभी ऊपर से देखने में तो अति सुन्दर मालूम पड़ते हैं किन्तु खाने में इनका असली भेद खुल जाता है उसी प्रकार से बाह्यवेश तो संत, योगी, भक्त का बना लेते हैं दूर से देखने में तो सच्चे योगी ही मालूम पड़ते हैं किन्तु व्यवहार करने पर कोरे ही केरिया, पील, लाख जैसे ही निकल आते है। इसी बात को आगे फिर से कहते हैं।

थे जोग न जोग्या भोग न भोग्या, न चीन्हों सुर रायो।

कण बिन कूकस कांस पीसों, निश्चै सरी न कायों।

इस समय तो केवल बाह्य दिखावे के ही योगी है। योगी कहलाने पर भी आपने योग साधना नहीं की तो फिर बिना साधना के कैसे योगी हो सकते हो। इसलिये न तो तुमने योग ही किया और न ही भोग ही भोगा तथा न ही परमात्मा विष्णु का स्मरण ही किया अन्य सांसारिक कार्य करने में ही अपना समय व्यर्थ में गमाया तो समझो, बिना धान अनाज का भूसा-चांचड़ा ही पीसते रहे उससे कुछ भी प्राप्ति नहीं हो सकी। अपने कर्तव्य कर्म की सिद्धि नहीं हो सकेगी, घास से भूख नहीं मिटेगी।

म्हे अवधूं निरपख जोगी, सहज नगर का रायों।

जो ज्यूं आवै सो त्यूं थरपा, साचा सूं सत भायो।

हम तो अवधूं पक्षपात रहित योगी है। सदा ही स्वकीय सहज अवस्था में ही रहते हैं। हमें संसार की मोह-माया आच्छादित नहीं कर सकती। इस परमावस्था में रहते हुए भी जन-कल्याणार्थ जो कोई भी जैसी भी शंका तथा भावना लेकर आता है उसे उसी प्रकार की ही भाषा में समझाकर दुर्गुणों की निवृत्ति करते हैं और जो वास्तव में सच्चे लोग हैं वे मुझे बहुत प्रिय हैं।

मोरै मन ही मुद्रा तन ही कंथा, जोग मारग सहडायों।

सात शायर म्हे कुरलै कीयो, ना मैं पीया न रह्या तिसायों।

मैं आदि अनादि युगों का योगी होते हुऐ भी न तो मेरे कानों में मुद्रा है और न ही शरीर पर कंथा गुदड़ी है। मैंने

योग मार्ग को सहज ही में स्वीकार कर लिया है। बाह्य दिखावे की आवश्यकता नहीं है। सात चक्रों को मैंने भेदन किया है अर्थात् मूलाधार चक्र से ऊर्जा शक्ति का ऊर्ध्व गमन प्रारम्भ करके सहस्रार तक पहुँचा हूँ। मूलाधार चक्र के चलते समय ही एक एक चक्र का रस मैंने चखा है। उसका अल्प मात्रा में ही स्वाद लेकर वहीं नहीं रूका, आगे का और इन सात समुद्रों को तैरकर पार किया है। बीच में आने वाली आनन्द की झलक वैसी थी जैसे कोई प्यासा व्यक्ति जल को होठों पर लगा ले उस समय न तो वह प्यासा ही रहेगा और न ही पूर्णरूपेण जल पी ही सकेगा। अर्थात् बीच में पड़ने वाले चक्रों में आनन्द तो है परन्तु पूर्ण नहीं, केवल प्यास को मन्द ही कर सकता है। इसलिये योगी को अन्तिम सप्त सहस्रार में जाकर स्थिर होना चाहिये, वहीं पर ही शाश्वत आनन्द की प्राप्ति होगी।

डाकण शाकण निंद्रा खुध्या, ये म्हारै तांबै कूप छिपायों।

आशा रूपी डाकणी, तृष्णा रूपी शाकणी और निन्द्रा आलस्य तथा भूख प्यास आदि द्वन्द्वों को तो मैंने इसके विपरीत, निराश, संतोष, आलस्य रहित, जागृत, युक्ताहार, विहार आदि से नष्ट प्राय: कर दिया है। सूर्य के सामने अन्धकार छिप जाता है। उसी प्रकार से तृष्णा भी शक्तिशाली निराशा व संतोष के सामने छुप जाती है।

म्हारै मन ही मुद्रा तन ही कंथा, जोग मारग सहलियो।
डाकण शाकण निंद्रा खुध्या, ऐ मेरे मूल न थीयों।

इसलिये हमारा मन ही मुद्रा है और तन ही कंथा है। इन्हीं द्वारा मैने योग मार्ग को आत्मसात् कर लिया है। न तो मेरे डाकणी आसा है और न ही शाकणी तृष्णा है तथा भूख-प्यासादि द्वन्द्वों की सर्वथा निवृत्ति हो चुकी है। ये सभी मेरे मूल स्वरूप जीवन में नहीं है।

-साभार 'जम्भसागर'

कुछ प्रश्न

आजकल वन्यजीव वनों से निकलकर मानव बस्तियों में पहुंचने लगे हैं- 'यह वाक्य हम सभी ने किसी न किसी समाचार पत्र अथवा चैनल पर पढ़ा-सुना होगा। इसी वाक्य से मानव की दोषारोपण करने की मानसिकता प्रकट होती है। क्या मानव का अन्य जीवों के साथ कोई समझौता हुआ है कि अमुक प्राणी का अमुक क्षेत्र है? यदि इसका उत्तर 'नहीं' है तो क्या हमें यह नहीं सोचना चाहिए कि उनके क्षेत्र में हस्तक्षेप किसने आरंभ किया? किसने उनके प्राकृतिक आवास का क्षेत्र कम करके स्टील-कंक्रीट के जंगल खड़े किए? किसने अपनी स्वार्थ सिद्धि के लिए प्रकृति का उपयोग अथवा दोहन न करके शोषण किया?

यह वही समय है जब मानव को न केवल इन प्रश्नों के उत्तर खोजने चाहिए, अपितु इन पापों के प्रायश्चित का प्रयत्न भी साथ ही करना चाहिए और यह प्रायश्चित मानव जाति का प्रकृति पर नहीं अपितु स्वयं मानव जाति पर ही उपकार होगा।

अब यह हमें ही सोचना होगा कि हम हमारी भावी पीढ़ी के लिए कैसी विरासत छोड़ना चाहते हैं? प्रथम यह कि हमारे क्षणिक आनंद और विलासितापूर्ण जीवन की कीमत भावी पीढ़ी चुकाए। उदाहरणत: हमारी कुछ घंटों की एयरकंडीशंड नींद की कीमत हमारी संताने ओजोन परत में क्षरण के कारण होने वाली स्किन कैंसर जैसी बीमारियों से चुकाएगी। वैसे ही हमारी छोटी छोटी व अनावश्यक दोपहिया- चौपहिया वाहनों की यात्रा की कीमत वो अजन्मी पीढ़ी अस्थमा जैसे गंभीर श्वसन रोगों से चुकाएगी। हमारी रासायनिक उर्वरकों व पेस्टीसाइड के प्रयोग से उत्पन्न फसलों की कीमत भावी पीढ़ी को बंजर भूमि से उत्पन्न भुखमरी और कुपोषण से चुकानी होगी। यह तो मात्र कुछ उदाहरण है वास्तविकता और भी भयावह हो सकती है।

वहीं हमारे समक्ष दूसरा विकल्प ईश्वर द्वारा प्रदत्त बुद्धि व चेतना का प्रयोग करते हुए श्री गुरु जम्भेश्वर भगवान द्वारा प्रवर्तित मार्ग पर चलते हुए भविष्य के लिए ऐसी विरासत छोड़ने का है, जिससे हमारी भावी पीढ़ियों को ऐसा वातावरण मिले जिसमें न केवल मानवता अपितु संपूर्ण प्राणी जगत का सर्वांगीण व समावेशी विकास हो। मानवता के इस नवीन अध्याय को लिखने के लिए हमें नवीनता एवं परिवर्तन की आवश्यकता है। उदाहरणत: हमें कुछ आदतों में परिवर्तन करना होगा, प्रकृति का सम्मानजनक उपयोग तथा संरक्षण करना होगा, स्वच्छ ऊर्जा के लिए क्रांतिकारी कदम उठाने होंगे और सबसे महत्वपूर्ण श्री गुरु जम्भेश्वर भगवान द्वारा प्रदर्शित पथ पर संयम, विश्वास और धैर्य के साथ अडिग रहना होगा।

अंतिम प्रश्न- क्या हम दोषारोपण करने वाली स्वार्थी प्रकृति को छोड़कर अपनी संतानों तथा उनकी संतानों के सुखमय जीवन के लिए यह परिवर्तन व त्याग हमारे जीवन में अंगीकार कर सकते हैं? क्या हम संपूर्ण प्राणी जगत तथा प्रकृति की भलाई के लिए गुरु जम्भेश्वर भगवान द्वारा दिखलाए मार्ग पर चल सकते हैं?

-सुमित सुभाष थापन
नई मंडी घड़साना,
जिला श्रीगंगानगर (राज.)
मो. 9462449490

संपादकीय

^ek* e g thou dk egRo

माँ ईश्वर की इस धरती पर सर्वश्रेष्ठ कृति है। माँ की कोई परिभाषा नहीं है। माँ तो वो होती है जिसे शब्दों में बयां ही नहीं किया जा सकता। शब्दों से परे है माँ की परिभाषा। माँ केवल एक शब्द ही नहीं बल्कि एहसास और अटूट प्रेम का प्रतीक एक ऐसी देवी है जो अपने बच्चों के लिए अनमोल त्याग, तपस्या, सेवा, भावना, अहसास, साधना, अनुष्ठान, स्नेह, ममता, बलिदान, प्रेरणा, धैर्य, साहस, समर्पण, असीमित व अपार प्यार देती है। वह हमें केवल जन्म ही नहीं देती बल्कि हमें जीवन जीने के तरीके, मूल्यों और सिद्धांतों की शिक्षा भी देती है। हमारी सर्वप्रथम गुरु माँ ही होती है जो हमें सही और गलत का भेद समझाती है। हमारे जीवन का आधार व लक्ष्य बतलाती है। माँ बिन तो ये जीवन अधूरा, महत्वहीन और जग सूना लगता है। माँ का महत्व तो उनसे पूछो जिनकी माँ नहीं होती। जो माँ के प्यार, लोरी, गीत और अहसास से वंचित रहे हैं। स्वयं ईश्वर भी माँ के स्नेह व प्रेम को पाने के लिए इस धरा पर अवतार रूप में जन्म लेते रहे हैं। जैसे कि दो-दो माँओं, एक मैया यशोदा और दूसरी माँ देवकी का प्यार पाकर स्वयं प्रभु श्री कृष्ण धन्य हो जाते हैं। श्रीकृष्ण कहते हैं कि माँ की गोद में जीवन के अनुभव का बड़ा ही आनन्द प्राप्त होता है। आनन्द से भी अधिक परमानन्द की अनुभूति होती है। माँ के आंचल में जीवन की वास्तविकता प्रत्यक्ष रूप से दिव्य क्षमताओं का परिचय देती है। जब हम अपने मुख से माँ शब्द कहते हैं तो ऐसा प्रतीत होता है, मानो हमारी सभी समस्याएं जादुई रूप से हल हो जाती हैं। जीवन के आरम्भ से लेकर अंत तक हमारी सबसे बड़ी समर्थक और मार्गदर्शक होती है माँ। उनकी दी गई शिक्षा जीवन भर हमारे साथ रहती है, माँ हमें नैतिकता, सच्चाई, नि:स्वार्थ प्रेम, वास्तविकता, संवेदना, ईमानदारी और दयालुता जैसे जीवन के महत्वपूर्ण मूल्यों को सिखाती है। माँ ही है जो हमें जीवन के हर पहलू को सही तरीके से जीने की कला सिखाती है। एक माँ स्वयं चाहे जितने भी कष्ट सह ले, लेकिन अपने बच्चों पर किसी तरह की आँच तक नहीं आने देती है। इतिहास ऐसी अनेक घटनाओं के वर्णनों से भरा हुआ है, जिसमें माताओं ने अपनी संतानों के लिए विभिन्न प्रकार के कष्ट सहते हुए अपना सर्वस्व न्यौछावर कर दिया है। माँ का जीवन तो त्याग और समर्पण का प्रतीक है। यही समर्पण हमें जीवन में कृतज्ञता और सेवा का महत्व सिखाता है। माँ शब्द के अर्थ को उपमाओं अथवा शब्दों की सीमा में बांधना संभव नहीं है। इस शब्द की गहराई, विशालता को परिभाषित करना सरल नहीं है क्योंकि इस शब्द में ही संपूर्ण ब्रह्माड, सृष्टि की उत्पत्ति का रहस्य समाया है। कोई भी व्यक्ति अपने जीवन में मातृ ऋण से मुक्त नहीं हो सकता। भारतीय संस्कृति में जननी एवं जन्म भूमि दोनों को ही माँ का स्थान दिया गया है। मानव अपनी भौतिक आवश्यकताओं की पूर्ति जन्म भूमि यानि धरती माँ से, तो जीवनदायी आवश्यकता की पूर्ति जननी से करता है। माँ अनंत शक्तियों की धारणी होती है। इसलिए उसे ईश्वरीय शक्ति का प्रतिरूप मानकर ईश्वर के सदृश्य माना गया है। लेकिन आज के यथार्थपरक और भौतिकीय जीवन की लिप्सा में हम माँ के महत्व को तो क्या जन्म देकर पाल-पोस कर बड़ा करने वाली, जीवन को सफलता की ऊँचाइयों तक पहुंचाने वाली, हमारे उज्ज्वल भविष्य की कामना करने वाली माँ को ही हम भूल जाते हैं। मेरा यह प्रश्न केवल समाज के किसी एक प्राणी मात्र से नहीं है अपितु सम्पूर्ण विश्व से है। क्यों आज एक माँ अपने ही बनाये घर-परिवार से बेघर हो रही है? आज हम माँ के अस्तित्व को भूल रहे हैं, उसे नकार रहे हैं। क्या ये उचित है? माँ की कथा तो अनादि है, ये अध्याय नहीं है और माँ बिन हमारे जीवन का कोई पर्याय नहीं है। इसलिए माँ के समीप रहकर उसकी सेवा करके, उसके शुभ वचनों, शुभाशीष से जो आनन्द प्राप्त किया जा सकता है वह अवर्णनीय है। अपने दिए स्नेह के सागर के बदले माँ बच्चों से कुछ नहीं चाहती। वह हर हाल में अपने बच्चों का हित सोचती है। इसलिए सर्वप्रथम हमारा यही कर्तव्य बनता है कि हमें अपनी ओर से उसे कभी दु:ख या आँसू नहीं देने चाहिए। हर घर में माँ की पूजा हो हमें ऐसा संकल्प उठाना चाहिए। दुनिया की हर माँ के चरणों में हमें शीश झुकाना चाहिए।

माँ पृथ्वी है, जगत है, धूरी है। माँ बिन इस सृष्टि की कल्पना अधूरी है॥

साखी

ऊदोजी कृत कणां की साखी

दीने जागो दीने जागो, ओ गुरु परगट आयो।1।
संभराथलि सतगुरु प्रकाश्यो, चोचक आण फिरायो।2।
गाफल भूल रहया भूलावे, करणी साध चेतायो।3।
गाफल थूल अभेद मूरखा, क्यूं परचे परचायो।4।
गुरु न चीन्हो पंथ न पायो, अहलो जलम गुमायो।5।
करणी हीन कुचील कुबधी, मिनखां रतन गुमायो।6।
रहे निरंतर नर निरहारी, भल तीर्थ निज बाणी।7।
खुद्यिया तिसना निन्द्रा नाही, न पीवै गोरस अन्न पाणी।8।
सुरगा पुर का माघ बतावै, इसड़ा लहो रे बिनाणी।9।
सतगुरु निंदे देवल बिंदे, धोके काठ पखाणी।10।
तीरथ न्हावै पिंड छलावै, जोय जोय नीर निवाणी।11।
सुरगां पुर का माघ न जाणै, भूला भुंवै इवाणी।12।
अश्वपति गजपति जातां दीठा, कोटां रा सिरदारा।13।
ते राजिन्दर जातां दीठा, चिण चिण बंक दवारा।14।
जांरी आण दुहाई फिरती, छतर सिर छतर धारा।15।
धंधो करंता जुवरै मूवां, पड़िया रहया पसारा।16।
सुर तेतीसूं कर मिलावो, म्हारे उमाहो गुरु अपारा।17।
वीनतड़ी ऊदो बोले, सेवक विसन तुम्हारा।18।

भावार्थ– हे सज्जनों! अब जग जाओ! सूर्योदय हो चुका है, अब दिन हो गया है रात्रि का अन्धकार अब नहीं रहा क्योंकि स्वयं विष्णु ही गुरु के रूप में प्रगट हो चुके हैं।1। सम्भराथल पर सतगुरु ने ज्ञान का प्रकाश किया है और यही ज्ञान चारों तरफ फैल चुका है, इस जम्बूद्वीप में मर्यादा बांधी जा रही है किन्तु आप लोग अब तक सो रहे हैं। गाफिल मूर्ख लोग तो सद्मार्ग को भूल चुके हैं और दूसरों को भी भुलावे में डालकर धर्म से विमुख कर रहे हैं। सतगुरु ने आकर कर्त्तव्य कर्म का पाठ पढ़ाकर सचेत किया है। साधु जन तो सावधान हो चुके हैं।3। शैतान की तो कुबध्या ही खेती है वे लोग तो स्थूलता, मूर्खता, भेदभावपना ही अपना धर्म कर्म मान बैठे है उन्हें कैसे मार्ग में लाया जा सकता है। ये लोग अपना स्वभाव छोड़ने के लिये तैयार नहीं है।4। इन लोगों ने तो न ही गुरु को ही पहचाना और न ही पंथ को ही अपनाया व्यर्थ में जन्म खो दिया।5। कर्त्तव्य हीन कुचील कुबध करने वाले ऐसे लोग तो इस संसार में आकर हानि को ही प्राप्त हुए है। क्योंकि मानव जन्म रूपी रत्न को इन्होंने खो दिया।6। यहां सम्भराथल पर सतगुरु आये हैं निरंतर यहीं पर ही निवास करते हैं किन्तु निराहारी है। सांसारिक भोग्य वस्तुओं की आवश्यकता उन्हें नहीं है। उनके यहां पर निवास करने से अच्छा तीर्थ बन चुका है। उनकी वाणी भी अपनी निजी अनुभूति है इसलिये निराली ही है।7। भूख, प्यास, निद्रा आदि उन्हें नहीं सताती इसलिये भोजन आदि ग्रहण नहीं करते। वे तो सदा अमृत रस का ही पान करते हैं।8। स्वर्ग तथा वैकुण्ठ जाने का रास्ता बता रहे हैं। हे प्राणी! ऐसे सतगुरु की शरण ग्रहण करो। जो जन्म मृत्यु के चक्कर से छुड़ा दे।9। कुछ लोग सतगुरु के सिद्धान्त को नहीं अपनाते किन्तु सतगुरु की निंदा करते हैं और पत्थर आदि की बनी हुई मूर्तियों के आगे जाकर सिर पटकते हैं। चेतनमय ज्योति, जागती ज्योति को छोड़कर पत्थर पूजा कहां तक उचित है।10। तथा अन्य कुछ लोग तीर्थो में जाकर या अपने घरों में ही बैठे हुए धोक लगाते हैं, पूजा करते हैं। गया आदि में जाकर पिण्ड भराते हैं। मृतक को अन्न जल देते हैं। ये लोग तो जल की भांति निरंतर नीचे ही गिरते जा रहे हैं।11। स्वर्ग पूरी का मार्ग तो जानते ही नहीं परन्तु इस लोक में ही भूले हुए भटक रहे है। ऐसे लोगों का जीवन व्यर्थ है। खाली ही रह गये कुछ भी प्राप्त नहीं कर सके।12। इस संसार में अब तक कौन स्थिर रहा है, अनेकों हाथी घोड़ों के मालिक भी अपनी संपति को छोड़कर जाते हुए देखे गये हैं तथा बड़े–बड़े कोट किलों के मालिक भी चले गये।13। वे राजेन्द्र भी जाते देखे हैं जिन्होंने अपने रहने के लिये बड़ी–बड़ी हवेलियां, किले बनाये थे। सुरक्षा का प्रबन्ध युक्ति से किया था। परन्तु उनकी सुरक्षा नहीं हो सकी।14। जिन राजाओं का संसार में आदेश अन्य राजा लोग माना करते थे उनके भय से लोग डर जाया करते थे, वे सम्राट थे, जिनके सिर पर दिव्य छत्र मुकुट रखा जाता था वे भी चले गये।15। अनेकों धन्धा करके धन जोड़ा जाता था किन्तु काल ने उनको नहीं छोड़ा। उनका किया हुआ पसारा यहीं रह गया और साथ लेकर कुछ भी नहीं गये।16। हे देव! हमें तो तेतीस करोड़ देवताओं से मिला दो। हमें तो उनसे मिलने की बड़ी उम्मीद एवं उमंग है। ऊदोजी विनती करते हुए कहते हैं, हे विष्णु! मैं तो आपका ही सेवक हूं। मुझे अन्य किसी से कोई आशा नहीं है।18।

–भावार्थ प्रकाश

रतन काया सोभंति लाभै

सबद 23 में विशेष रूप से गुरु जम्भेश्वर जी ने जीवन युक्ति-मुक्ति के बारे में बताते हुए कहा है। इस युक्तिपूर्वक जीवन जीने के लिए अन्त में मुक्ति के लिए प्रथम साधना करनी होगी। जिससे रतन काया शरीर की प्राप्ति होगी। इसी सबद में चार-चार के चार साधन बतलाए हैं। इन साधनों का भली-भांति आचरण करने से दिव्य रतन काया की प्राप्ति होगी। आवश्यक है रतन काया की प्राप्ति अन्यथा आगे का मार्ग अवरुद्ध है। यहां पर यह भी विचारणीय है कि वह रतन काया क्या है ?

इस मानव शरीर से सांख्य दर्शन के अनुसार पच्चीस तत्वों की गिनती की है। उन पच्चीसों में सबसे महत्वपूर्ण तत्व हृदय है। यह दिल हमारे साथ जन्म से ही आया है, किसी ने दिया नहीं है। बुद्धि तो जन्म के बाद यहां पर मिलती है। किन्तु हृदय जन्म के साथ ही आता है।

दिल व दिमाग का आपस में तालमेल नहीं होगा तो कोई कार्य सुचारू रूप से सम्पन्न नहीं होगा। यदि बुद्धि कमजोर होगी तो दिल अपना कार्य, भाव इस शरीर से करवा लेगा। वह दिल अंधा है, इसे अच्छे-बुरे का कुछ भी ख्याल नहीं है। पाप-पुण्य का कुछ पता नहीं है। इसलिए निर्णय ठीक से नहीं हो पाता और कुछ भी कर लेता है। परिणाम आने पर पछतावा ही हाथ लगता है। यदि उस समय बुद्धि, ज्ञान, श्रेष्ठ हो तो निर्णय कर लेता है और अधर्म से वापिस लौटा लेता है तो कार्य ठीक से सम्पन्न हो जाता है।

हृदय एक भाव प्रधान है। अनेक भावनाएं उठती हैं। भावनाओं का विशाल सागर उमड़ने लगता है। यह अच्छे-बुरे भी हो सकते हैं। उन भावनाओं को क्रिया-कर्म में प्रयोग करने लगे तब तो तबाही होना निश्चित है। जैसे दिल से भाव, काम, क्रोध, लोभ, मोह, ईर्ष्या, राग-द्वेष इत्यादि हृदय के भाव हैं। इन पर बुद्धि नियंत्रण करती है, वह बुद्धि यदि हृदय के भावों के सामने कमजोर हो गयी तो ये सुख-दु:खादि भाव प्रबल होकर मानव पर हावी हो जाते हैं। यही व्यक्ति को सुख-दु:ख मान प्रतिष्ठा जीवन युक्ति-मुक्ति की ओर ले जाते हैं।

यहां पर सबद 23 में इस स्वभाविक साथ देने वाले हृदय को ही रतन काया में ढालना है। इन जीवन के विपरीत स्वभावों को बहिष्कृत करके सभ्य भावों को स्थापित करना होगा तभी यह काया रतन हो जाएगी। जिसको प्राप्त करके **'रतन काया सो भंती लाभै, यही काया पार गिराये'** संसार सागर से पार उतार देगी।

1. साल्हिया हुवा मरण भय भागा, अर्थात् अपने स्वविवेक से अल्हिया त्याज्य व्यर्थ का कूड़ा कचरा है, उसे त्याग देना। शुद्ध पवित्र सहज जीवन की कला से युक्त होना है। उसका मरने का भय निवृत हो जाएगा। मरने का भय से सभी ग्रसित हैं किन्तु साल्हिया हुवा मरण भय भागा' जो गाफिल यानि अज्ञानी है जो अज्ञानता की मोह-माया में उलझा हुआ है। अब तक उसे सत्य मिथ्या का विवेक नहीं है। वह मरने से बहुत ज्यादा डरता है। भय ही मृत्यु है। निर्भय ही अमृत है।
2. गुरुदेव कहते हैं कि सतगुरु की प्राप्ति आपको हुई है। सतगुरु ने सतपंथ बताया है और भ्रान्ति मिटा दी है 'मरणे बहुत उपकार करे'। यह शरीर तो पंच भौतिक हैं, इन्हें जीवित रखने के लिए इन्हीं पंच आकाश, वायु, तेज, जल और धरणी के तत्वों को ग्रहण करते हैं। इसमें तुम्हारा-हमारा कुछ भी नहीं है। हमने केवल अपना है ऐसी मान्यता दे रखी है कि कहीं यह मेरा शरीर नष्ट न हो जाये। यही अज्ञानता दु:ख भय के गर्त में डाल देती है। इस शरीर से धर्म-कर्म, सेवा, परोपकार कार्य करने चाहिए थे। जो इस शरीर को रतन काया बना देते किन्तु

चूक गया है। देश, धर्म, मर्यादा की रक्षा करते हुए इस शरीर को समर्पित कर देता तो बहुत बड़ा उपकार का कार्य हो जाता है। सदा-सदा के लिए आनेवाली पिढ़ी के लिए अनुकरणीय हो जाता 'मरणे बहु उपकार करै' इसी एक सत्य वचन को जाम्भोजी के शिष्यों ने अपनाया था जिसके प्रभाव से जीव-जन्तुओं पर तथा दरखतों-वृक्षों की रक्षार्थ अपना बलिदान इस बिश्नोई जाति के लोगों ने दिया था। जिसका उदाहरण खेजड़ली, तिलवासनी, रेवासड़ी, पोलावास आदि घटनाओं का वर्णन विस्तृत रूप है। इनका इतिहास जाम्भाणी साहित्य में वील्होजी, केशोजी, रामोजी, गोकुल जी आदि ने लिखा है जो इस समय उपलब्ध है।

3. 'जंपो विष्णु न दोय दिल करणी' विष्णु का जप करो अर्थात् जो 'विप्लृ-व्यापके' अर्थात् जो सर्वत्र व्यापक विष्णु है। 'घट घट अघट रहायो' जो प्रत्येक शरीरधारी में है तथा अशरीर-आकाश में भी सर्वत्र है। जहां चीन्हो ताहां पायो' जो श्वास-प्रवास के रूप में है ऊर्जा शक्ति जीवन-जीव के रूप में है। वहीं आपके हमारे अन्दर जीवनी शक्ति के रूप में विद्यमान है। उसका स्मरण ध्यान योग करो। उसी की भक्ति भाव **'हृदये नाव विष्णु का जंपो, हाथे करो टवाई' हृदय हरि सिंवरिलो' 'एक खिण मांहि तीन भवन म्हे पोखां' जीवा जूण समाई।85**
विष्णु विष्णु तूं भण रै प्राणी, पैके लाख उपाजूं, रतन काया वैकुण्ठे बासो, तेरा जरा मरण भय भाजूं॥118॥

अर्थात् विष्णु का ही जप करो किन्तु 'न दोय दिल करणी'। एक मन एक दिल यानि पूर्ण श्रद्धा विश्वास से एकाग्रचित होकर भक्ति भाव करे।

4. 'जंपो विष्णु न निंदा करणी' विष्णु का जप ध्यान करें किन्तु किसी की निंदा नहीं करनी चाहिए। 'निंदरा हड़ै कसौभी' निंदक दूसरे को नीचा दिखाने का प्रयास करता है किन्तु उससे स्वयं नीचे गर्त में चला जाता है। निंदक की शोभा प्रतिष्ठा उसके द्वारा की हुई दूसरे की निंदा हरण कर लेती है जो प्रकृति द्वारा प्रदत्त अच्छा या बुरा जो कुछ है उसका आप जिम्मेवार नहीं है जो है उसे स्वीकृति प्रदान कर दो तो आप तो निंदा से बच सकते हैं। किसी को निद्य मानना इससे निंदक की प्रतिष्ठा-सम्मान बढ़ने वाला नहीं है।

5. **मांडो कांध विष्णु के सरणै, अतरा बोल करो जे साचा, तो पार गिराय गुरु की वाचा॥23॥**

भगवान विष्णु की शरण ग्रहण करके अपना सर्वस्व समर्पण कर दो' है तो उन्हीं का ही फिर आप क्यों व्यर्थ का भार उठा रहे हैं। तेरा तुझको अर्पण क्या लागै मेरा॥ नमन प्रणाम करने का सिर झुकाने का भी यही अर्थ है 'हमारा सिर ऊंचा रहे झुके नहीं यही अहंकार है, यही सभी को रूलाता भी है, परेशान-दुखी करता है। इस अहंकार को बचाने के लिए मानव प्रयत्नशील रहता है। बड़े कष्ट उठाने पड़ते हैं। गुरुदेव कहते हैं कि गिरा दो अहंकार को और रतन काया की प्राप्ति कर लो, ये गुरु के वचन हैं।

6. **खणां ठवणां चवरां भवणां, तांहि परे रै रतन काया छै।**

मानव के भौतिक शरीर पे होने वाली क्रियाएं यहां चार प्रकार की बतायी हैं। खणं शब्द उच्चारण करना। ठवणां- स्थिर होना, चंवरा- विश्राम शांत सुखी होना। भवणां- भ्रमण करना कार्य में संलग्न रहना इत्यादि क्रियाएं पंच भौतिक दृश्य शरीर में दृश्यमान है। इससे ही कर्म होता है। यह कर्म करने का साधन है यह शरीर मात्र साधन है। इससे साध्य की प्राप्ति की जाती है किन्तु यह साध्य नहीं है। इसलिए कहा गया है कि 'तांहि परे रै रतन काया छै' इस दृश्य शरीर से परे अर्थात् इसको प्रेरित संचालित करने वाली रतन काया है। जो सूक्ष्म एवं इस शरीर की राजा है 'पंच आतमा परिवारू' इस शरीर रूपी परिवार की यह रतन काया पंच है।

आगे कहते हैं कि यह रतन काया प्राप्त कैसे होती है 'लाभै किसे विचारे'।

7. **जे नविये नवणी, खविये खवणी, जरिये जरणी, करिये करणी।**

यहां पर भी चार उपाय बताये हैं यदि कोई नमन करने योग्य व्यक्ति या देवताओं को नमन करता है। शीश झुकाकर प्रणाम करता है। अहंकार को गिरा देता है। खविये खवणी-क्षमा करने योग्य को क्षमा कर देता है।

'क्षमा दया हिरदै धरो' जरिये जरणी-जरना करना अर्थात् सहनशक्ति रखना। जो कोई आवै हो होकर आप ज हुइये पाणी' काम क्रोधादि को जला देता है। करिये करणी- कर्तव्य कर्म करे। शास्त्रवेद विहित सतपुरुषों द्वारा आधारित धर्म-कर्म का आचरण करें। सत्यवद, धर्मम्चर' ये रतन काया प्राप्ति के उपाय हैं। इसलिए कहा- 'सीख हुवा घर जाइये' यह शिक्षा है इसे लेकर वापिस अपने घर जाइये। यह रतन काया इस प्रकार के सांचे नियमों में बंधी हुई है। 'रतन काया सांचे की ढोली' रतन काया की प्राप्ति की यह कुंजी है इसे लेकर जाना होगा।

8. **गुरु प्रसादे केवल ज्ञाने, धर्म अचारे, शीले संजमे।**

यहां पर चार उपाय बतलाये हैं। उस रतन काया की प्राप्ति के लिए गुरु प्रसादे- गुरु का प्रसाद प्राप्त करें। 'सतगुरु तूठे पाइयै' सतगुरु द्वारा ही प्रसाद प्रसन्नता मितली है। जे थे गुरु का शब्द 'मानिलौ तो लंघिबा भवजल पारूं।'

केवल ज्ञाने- कैवल्य ज्ञान 'वह रतन काया कैवल्य है। वह आत्मा-परमात्मा रूप है। एकमेव अद्वितीयम् '**ऐसा ब्रह्म ज्ञान विज्ञान आस्तिक्यं ब्रह्म कर्म स्वभावजम**' (गीता)। धर्म अचारे- धर्म आचरणीय है। केवल कथन श्रवण करने से धर्म नहीं होता है 'जो आराध्यो राव युधिष्ठिर सो आराध्यो रे भाई' युधिष्ठिर ने धर्म का आचरण- तद्वत जीवन जीया है। धर्मराज इसलिए कहलाए हैं। '**सत्यं वद, धर्मं चर को आचारी आचारे लेणा, सहजे शीले सहज पतीत्रं**' आचारवान- आचार्य केवल धर्म की बात कहता नहीं है, उसका आचरण करता है, वही आचार्य है।

शीले संजमे- शील व्रत का धारण करके संयमित जीवन जीता है। योग के आठ अंगों को धारण करता है। यम-नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान, समाधि 'सतगुरु तूठे पाइये' इस प्रकार से जीवन यापन करने वाला साधन रतन काया की प्राप्ति करता है। साधक का स्वयं का प्रयास तो होना ही चाहिए। इसके साथ ही गुरु प्रसादे सतगुरु तूठे पाइये' सतगुरु का प्रसाद असीम कृपा भी होनी चाहिए, तभी प्राप्त कर पाता है।

यहां पर हृदयस्थ आत्म तत्व को गुरु जाम्भो जी ने रतन काया कहा है वैसे तो सामान्य आत्मा तो सर्वत्र व्यापक है किन्तु 'हृद्देशे अर्जुन तिष्ठति'। 'हृदये नाम विष्णु को जंपो हाथे करो टवाई' हृदय कोश में ही आत्मा की अनुभूति आनन्द रूप में होती है। उसी अनुभूति की प्राप्ति के लिए इन्हीं नियमों से गुजरना होगा। वैसे तो नौरतन प्रसिद्ध हैं किन्तु उनमें भी हीरा रतन अत्यधिक प्रसिद्ध और महत्वपूर्ण है। इसलिए जाम्भोजी ने बहुत प्रकार से उदाहरण के रूप में हीरे का निर्वचन किया है। यथा - 'गुरु हीरा बिणजै' (53), हीर स हीरा हीरू (63), बसंदर नहीं नख हीरूं' बिन रैणयर हीरे नीरै। (31)।

अतः नगों में हीरा श्रेष्ठतम है। उसी प्रकार शरीर में भी हृदय में स्थित आत्मा भी सर्वश्रेष्ठ है। उसी की ही प्राप्ति करनी चाहिए।

-आचार्य कृष्णानन्द
अध्यक्ष, जाम्भाणी साहित्य अकादमी
बिश्नोई मन्दिर, ऋषिकेश
मो.: 9897390866

इस सबद में जांभोजी महाराज ने उपस्थित जनसमूह को फरमाया कि तुम लोग अपने अंदर झांककर सोई आत्मा को जगाओ, अपने यथार्थ स्वरूप को पहिचान कर मनुष्य जैसा व्यवहार करो, इसलिए कहते हैं कि–

जुग जागो जूग जाग पिरांणी। कांय जागंता सोवो।
भलकै बीर बिगोवो होयसी, दूसमन कांय लकोवो।

आत्म कल्याण की सच्ची लगन छटपटाहट है तो इस मनुष्य देही में यह जमाना (जुग) व यह समय भोगविलासों में व अज्ञानता में सोये पड़े रहने का नहीं है बल्कि आत्मजागृति का है। (फिर से जाग रे भाई जाग, जाग रे भई जाग।

सब अपनी इस सफेद चादर में कुकर्मों का लगा रहे हैं दाग।
छापा तिलक लगाने वाले, पौथी पाठ पढ़ाने वाले।
जग को ज्ञान सुनाने वाले, तन के उजले।
हंस बन बैठे ऊपर से, भीतर विषधर नाग।
फिर से इन धूर्तों से जाग रे भटक्योड़ा जीवड़ा जाग!!

इस मनुष्य देही में विवेक और समझ की जो ज्ञान लौ आपके भीतर है वैसी पशुओं में जागृत नहीं होने से वे सिर्फ खाने–पीने, सोने व औलाद पैदा करने में ही उम्र पूरी कर जाते हैं, उनमें नहीं है, उनको कभी आभास ही नहीं होता कि हमारा कुछ और भी मकसद है। जबकि मानुष जीवन में हमारा श्रेष्ठ पुरुषों के संग होने से हममें कई बार यह भाव भी आता है कि सिर्फ खाने–पीने औलादों के लिए या धन–संपत्ति जोड़ने के बजाय इन महापुरुषों कि तरह आत्मज्ञान और आत्मीयता–विस्तार में भी समय शक्ति व चिंतन लगाना चाहिए, यह जो ख्याल आता है वही जागने का समय और उस समय जागकर हम आगे से अपने जीवन का क्रम ऐसे बनाएं कि आत्मजागृति का आंनद भी लेते रहें। यही प्रसुप्ति से जागृति की और शुरूआत है। यही हमारी सही मानवी यात्रा है। जिस दिन यह उत्कंठा आदमी के भीतर जग जायेगी कि –

प्रभु नर से नारायण बन जाएं, प्रभु ऐसा ज्ञान हमें देना।
श्रेष्ठ क्षमताएं विकसावें, प्रभु ऐसा ज्ञान हमें देना।
उर में सबके प्रति प्यार भरे, जल बनकर भरूथल में बिखरें।
दुःखियों के दुःख दूर करें, श्रम से कष्टों से नहीं डरें।

इसलिए इस मानव तन से जिस वक्त प्राण निकले उससे पहले अपने भीतर आलस्य प्रमाद डर लोभ मोह काम क्रोध और परनिंदा आदि शत्रुओं को इस जीवन से उपरोक्त प्रेरणाओं के दृष्टिगत बाहर निकाल फैंको।

ले कूंची दरबान बुलावो, दिल ताला दिल खोवो।
जंपो रै जिण जंप्यो जणीयर, जपसी सो जिण हारी।

इस मानव जीवन रूपी किले में जीवन विद्या रूपी कुंजी को गुरु रूपी महापुरुषों से सीखकर जीवन में लागू करो तो जीवन जीने का शानदार तरीका सुलभ हो जायेगा तथा दिल में सोयी पवित्र भावनाओं को जगने का अवसर मिलेगा अन्यथा तो जीवन में हाय–तौबा, ईर्ष्या–डाह, अहंता व वासना के झंझावात ही उठेंगे और उन्हीं से निपटने में यह जीवन खप जायेगा। भगवान का सही जप तो भव्य भावनाओं को जगाने को ही कहा गया है और भगवद मार्ग पर जो अब तक चले (नाम स्मरण किया) उनने जीवन को श्रेष्ठ भावनाओं रूपी जल से सींचा है। तभी इस जीवन से अज्ञानता दुष्टता व स्वार्थपरता रूपी रूक्षता क्षीण होगी, जीवन में सरसता छा जायेगी। यही जीवन कौशल है।

नीरस हुआ है जीवन, संवेदना नहीं है।
हे प्राण, पर उछलती सद्प्रेरणा नहीं है।
अमृत कलश छलकाकर, हे गुरुवर, जीवन अमृत पिला दो॥

लह लह दाव पड़ंता खेलो, सूर तेतीसां सारी।
पवण बंधन काया गढ़ काची, नीर छलै ज्यू पारी।

इसलिए गुरु महाराज फरमाते हैं कि जीवन कौशल जिसके जीवन में आ गया, वह शख्स हर खाली मौके का फायदा जीवन को उत्कृष्टता से जोड़ने में उठा लेता है। (देवत्व की पक्षधर शक्तियों से जुड़

कर जीवन में दया संवेदना परोपकार का साथ निभावें, यही 'सुर तेतीसा सारी' रूपी देवत्व का साहचर्य है।

हम भोग-विलास वासना अहंता के जग में, रहे सदा भटकते।
मिलती न शांति-छाया, रहते हैं सिर पटकते॥
गुंणतीस नियमों का जब, मन में संगम बन जाता है।
तब हरि का पावन विष्णुधाम, मन क्षीर सिन्धु बन जाता है।
(सुर तेतीसा)

इसलिए इस मिनखां देही को यम नियमों से इतनी सशक्त प्राणवान करने की युक्ति गुरु जनों से सीखो ताकि यह देही अपरिपक्व नहीं रहने पावे, क्योंकि अपरिपक्व फल भूख के निवारण में काम नहीं आता और कच्चा छोकरा फर्ज अदायगी नहीं कर पाता है। वैसे ही असंयम और भोग-विलास से कमजोर बनी देही पौरुष की प्रबलता तथा आत्मसाक्षात्कार के लिए उपयुक्त नहीं रहती है। क्योंकि असंयम से ग्रस्त शख्स अपने ओज व तेज से 'छूंछ' हो जाता है।

(पवन बंधन काचा गढ़ काची, नीर छलै ज्यूं पारी)
पारी बिनसै निर ढूलैला ओ पिंड काम न कारी।
काची काया द्रढ़ कर सींचौ, ज्यू माली सींचौ बाड़ी।

आगे इन लाइनों में वे फरमाते हैं कि आत्म उद्धार के इच्छुक इंसान आरामतलबी भोगों व कामवासनाओं में अपने ओज-तेज को क्षीण न होने दें, इसके लिए उसको अपने शरीर और मन को सात्विक दिनचर्या से बांधे रखकर उसे पुरुषार्थ व संयम परमार्थी वृतियों से सींचना व दृढ करना चाहिए ताकि यह मानव जीवन परिवार-समाज आदि सबके भले के लिए उपयोगी साबित हो सके। यही प्राणवान शख्स की सही पहिचान है, अन्यथा दुर्भाग्यशाली लोग आलस्य प्रमाद, अनुपयुक्त खान-पान दुर्व्यसनों व कुटेवों में फंसकर इस जीवन को बरबादी की तरफ धकेल देते हैं। यही सबसे बड़ा पतनपराभव कहलाता है।

ले काया बासंदर होमो ज्यू ईधन की भारी।
सूकरत जीव सखायत होयसी हेत फलै संसारी।

इन लाइनों में जांभोजी फिर फरमाते हैं कि जैसे अग्नि की तेजस्विता ईंधन डालने से कायम रहती है, ठीक इसी प्रकारमानवी काया में प्राणों का संचार करने वाली खुराक और वर्जिश तथा करतब व श्रेष्ठ कामकाज पर इंसान को गौर करना चाहिए क्योंकि प्राणशक्ति की अभिवृद्धि संयमित खान-पान और सात्विक आचरण और श्रेष्ठ कार्यों में अपने को खपाये रखने से होती है, यही इंसान का मकसद होना चाहिए तथा ऐसे श्रेष्ठ कर्मों और आत्मीयतापूर्ण जीवन क्रम से शांति, सुसमृद्धि औरआत्मिक सुख सौभाग्य नसीब होता (सुकरत जीव सखायत होयसी, हैत फलै संसारी)।

जीवन सारा खो दिया, करके भोग विलास।
बिना अपणांयत चखे, किसकी बुझे प्यास॥
शील सिनाने संजमे चालो, पाणी देह पखाली।
गूरु के वचने निंव खिंव चालो हाथ जपो जप माली।

इन लाइनों में बताया गया कि जीवनी शक्ति-अभिवृद्धि के लिए संयमित खान-पान व मर्यादा परक आचरण अपेक्षित है, इसी तरह शील, संतोष युक्त आचरण तथा शुचितापरक जीवनशैली (स्नाने संजमें चालो) हमारे लिए आवश्यक है। इसलिए गुरुजनों का मार्गदर्शन हमारे लिए जरूरी है और गुरुवचनों को बारंबार अपनी मनोभूमि में खपाने रूपी जपवृति को अपनाये रखो ताकि ये श्रेष्ठ बातें हमारा जीवन क्रम बन जायें।

पाकर सद्‌गुरु की कृपा दृष्टि, यह जीवन धन्य बन जाता है।
सत्संग समुद्र में डूब मनुज, यह भवसागर तर जाता है।
सत्संग से कई का जीवन बदल गया।
वाल्मीकि डाकू से कवि अरू विद्वान बन गया।
वसत पियारी खरचो क्यू नांही, किहि गूण राखो टालि।
खरचौ लाहो राख्यै टोटो, बिबरस जोय निहालि।

इन पंक्तियों में गुरु महाराज कहते हैं कि इस मिनखां देही रूपी परमात्मा की अमानत को श्रेष्ठ कामों में इस्तेमाल करने में कंजूसी मत करो। इसको सत्प्रवृत्तियों में लगाकर उबार लो ?

कर्म वही, जो दूर करे जीवन के सब शोक।
यह लोक सुधरे बिना, कब सुधरा परलोक?
जिसने अपने श्रम सिकरो से सींचा यह जगति का उपवन।
उसका जीवन ही जीवन है , वह महकेगा बनकर चंदन।
जन्म सफल यदि चाहोतो, रखो समय का ध्यान।
कर्तव्यों की पूर्ति से सबका करो कल्याण॥
आज श्रेष्ठता का भया, है ऐसा अकाल।
श्रेष्ठ कर्मों से ही होगा मनुज निहाल॥

(बिबरस जोय निहाली)

घर आगी इत गोवलवासो, कूड़ी आधोचारी।
आज मूवा कल दूसर दिन है, जो कूछ सरै सो सारी।

जांभोजी फरमाते हैं कि इस जीव की अनंत यात्रा में यह मिनखांजूंण तो थोड़े समय का पड़ाव भर है। जीव की हर रात्रि एक मौत तथा हरसवेरा नया जन्म-आगमन है (आज मूवा कल दूसरा दिन है), इसलिए उत्तम संगति साहचर्य और श्रेष्ठ आचरण से भले कर्म संपादित कर लो, इसमें मानवी जुंण की हकीकत व यथार्थता है।

यह दुनियां तो आनी जानी, गहरी नदिया नांव पुरानी।
बहुत सुनाई कथा कहानी, मगर किसी ने बात न मानी॥
पीछे कलियर कागा रोलो, रहसी कूक पूकारी।
ताण थकै क्यू हारयो नांही मूरख अवसर जौले हारी।

यहां इस दुनियां में तो किसी के अवसान पर मृत शरीर से स्वार्थवश जुड़े लोग ही अल्पकालिक शोकाकुल होते हैं और फिर अपनी क्षुधा निवारण और मोह-माया के दंदफंदों में निमग्न हो जाते हैं, यही जग की नियति है।

तांण थके क्यों हारयो नहीं, मुरखा अवसर जोले हा री।

जब तक साधनोंदि का गुमान था व धन यौवन का उबाल आता था तब तक तो मन को समझाया नहीं व इसको संयत नहीं करने के खूबसूरत मौके चुका दिये तो अब बिगड़ैल मन में पछतावे के अलावा कुछ हाथ लगा नहीं।

ऊंचे कुल में जन्म लिया, पर नींचकरनी रही जीवन-भर।
स्वर्णकलश वारुणी (जहर) भरकर, कौन सराहे वह नर पामर॥

-चूनाराम मांझू
रिटायर्ड ए.डी. एम., जोधपुर, उ.द.
मो.: 9414991103

शक्ति साधना

भक्ति का वरदान दो माँ चरण में यह वंदना,
शक्ति का संधान हो यही हमारी साधना।

चैत्र शुक्ल के प्रथम दिन आराधना सब करें,
आद्य शक्ति, ईश शक्ति ताप तन-मन का हरे,
हृदय में समायी हो करें तुम्हारी अर्चना।
भक्ति का वरदान दो माँ चरण में यह वंदना॥

आदि से जगज्जननी ज्ञान-विज्ञान प्रदायिनी,
पुरुष उर में प्रकृति तुम, तुम्हीं सौभाग्यदायिनी,
वशीभूत तेरे सकल जन कर रहे हैं प्रार्थना।
भक्ति का वरदान दो, माँ चरण में यह वंदना॥

जगदम्बिका, दुर्गा, भवानी तुम हो भयहारिणी,
शिवे, वैष्णवी, कल्याणी तुम हो भवतारिणी,
जगत का मंगल करो माँ यही अभ्यर्थना।
भक्ति का वरदान दो, माँ चरण में यह वंदना॥

सृष्टि का निर्माण प्रतिपदा को प्रारम्भ किया,
श्री राम, विक्रमादित्य का अभिषेक तुमने किया,
पूज्य हेडगेवार जी को जन्मदिवस शुभकामना।
भक्ति का वरदान दो, माँ चरण में यह वंदना॥

-हरि ओ३म तत्सत्

सबदवाणी में गोरखनाथ एवं अन्य नाथ योगी

गुरु जाम्भोजी के समय में जोग पंथ (नाथ पंथ) का व्यापक प्रभाव था। नौ नाथ और चौरासी सिद्ध तो प्रसिद्ध ही हैं। योग पंथ अथवा नाथ का प्रादुर्भाव कब से हुआ। इस विषय में निश्चित रूप से कुछ नहीं कहा जा सकता, परन्तु शिव को आदिनाथ कहा जाता है। गुरु जाम्भोजी ने अपनी वाणी में अनेक स्थानों पर शिव की महिमा एवं स्वरूप का वर्णन किया है– तदक्षेता एक निरालम्भ सिम्भू (4) जपा तो एक निरालम्ब सिम्भू (5) सहस्र नाम सांई भल सिम्भू (94) आप अलेख उपन्ना सिम्भू (105) सुरगां हूं तो सिम्भू आयो (118) म्है सिम्भू का फरमाया आया (85) अलाह अलेख अडोल अयोनी सिम्भू (6) (51) इतना मोह न माने सिम्भू (63)। उनकी वाणी में शिव धनुष खैंचने का भी उल्लेख आया है। देखें– **तिण किण खैंच न सकै, सम्भू तणी कमाणो**(58)

बिश्नोई समाज में यह बात बहुत प्रसिद्ध है कि तालवा मुकाम में जहां जाम्भोजी का समाधि मंदिर है। वह स्थान शिव की तपस्या का केन्द्र रहा है। यहां हजारों वर्ष पूर्व शिव ने तपस्या की थी और यहां उनका 'धूणा' था। वैसे तो नाथ पंथ का प्रारम्भ आदिकाल से माना जाता है और इसके आदिनाथ शिव हैं परन्तु शैव मत और नाथ पंथ अलग-अलग कब हुए। इस विषय में कुछ निश्चित रूप से कुछ नहीं कहा जा सकता। 16वीं शताब्दी के राजस्थान में नाथों के बारह पंथों मे सत्यनाथी, यावपंथी, कपिल पंथी, वैराग्य पंथी, रावल पंथी आदि का विशेष प्रचलन था। नौ नाथों में गोरख, जालंधर, गोपीचन्द, भरथरी और चर्पट का विशेष प्रभाव था। इस नाथ योगियों से राजस्थान के अजमेर, चित्तौड़, जोधपुर, जैसलमेर के राजा-महाराजा भी काफी प्रभावित थे।

नाथों में सबसे अधिक आकर्षक और प्रभावशाली व्यक्तित्व गुरु गोरखनाथ का रहा है। नाथ पंथ में इनसे पूर्व भी अनेक आचार हुए हैं, परन्तु इन्होंने ही नाथ पंथ को संगठित करके उसे एक नया रूप दिया था। आज भी अनेक लोक कथाओं में उनके चमत्कार, सिद्धियों और दर्शन देने का वर्णन हमें पढ़ने-सुनने को मिलता है। गोरखनाथ को जोगी बहुत पुराने जमाने से जिंदा मानते हैं। कहते हैं भरथरी, गोपीचन्द, पूर्णभक्त, चौरंगीनाथ, गोगा जी आदि को गोरखनाथ ने दर्शन दिये थे। इसी तरह ही जाम्भोजी, हरिराम निरंजनी एवं जसनाथ को उनके दर्शन देने का उल्लेख मिलता है। हालांकि इन बातों में काल भेद है। क्योंकि गोरखनाथ का समय 10वीं से 12वीं के मध्य माना जाता है जबकि जाम्भोजी आदि का समय 16वीं शताब्दी का है। परन्तु इन बातों से उस समय राजस्थान में गोरखनाथ और नाथ पंथ के व्यापक प्रभाव उनकी प्रसिद्धि का पता चलता है। यह तो सर्वविदित है कि गोरखनाथ के गुरु मत्स्येन्द्रनाथ (मछंदर नाथ) थे जिनका समय 12वीं शताब्दी से पूर्व का है।

गुरु जाम्भोजी ने अपनी वाणी में 'जाम्भा गोरख गुरु अपारा' (94) कहकर गोरखनाथ का सम्मान किया है। उनका कहना है कि जाम्भोजी और गोरखनाथ अपार गुरु हैं। उन्होंने इन्द्रियों के दमन करने वाले को गोरख कहा है, देखें– एक आसन पर अनादिकाल से बैठा है। देखें– 'तउवा जाग ज गोरख जाग्या' (65) बिश्नोई समाज में बहुप्रचलित कलश पूजा मंत्र में लिखा है–

बैठी गंगा बैठी जमना बैठी सरसती।
थरपना थामी बालै गोरख निरंजन जति॥

इस शब्द से यही सिद्ध होता है कि वह अनादि पुरुष शिव ही है जो एक आसन पर हजारों वर्षों से बैठा है। वह गोरख यह लौकिक गोरख नहीं है बल्कि स्वयंभू (शिव) है और सिम्भू के संबंध में कहे गये। गुरु जाम्भोजी के शब्द हम उपर्युक्त कह चुके हैं।

कुछ विद्वानों ने 'गोरख' को आदि शिव अथवा विष्णु माना है। लेकिन शिव पुराण में विष्णु के सहस्र नाम बताये हैं जिनमें गोरख एवं गोपाल को विष्णु का पर्यायवाची नहीं बताया है। शिव पुराण में ही शिव के 108 नाम बताये हैं जिनमें गोरख एवं गोपाल नहीं है। महाभारत में कृष्ण ने अपने अनेक पर्यायवाची नाम बताये हैं जिनमें गोरख और गोपाल नहीं है। इसी तरह रामचरित मानस में राम के अनेक पर्यायवाची नाम बताये हैं लेकिन उनमें भी गोरख और गोपाल नाम नहीं है। इसी तरह ब्रह्मा के 108 पर्यायवाची नाम बताये हैं उनमें गोरख एवं गोपाल नहीं हैं। अत: हम गोरख अथवा गोपाल को शिव, विष्णु, ब्रह्मा, राम अथवा कृष्ण नहीं मान सकते हैं। यह कुछ विद्वानों की धारणा मिथ्या है।

इसी तरह बिश्नोई समाज में बहुप्रचलित कलश स्थापना मंत्र में सतयुग में प्रह्लाद जी के समय सृष्टि संरचना में कलश की स्थापना निरंजण बाले जी कैसे कर सकते हैं। इसी तरह सबद संख्या 65 में बताया गया है 'तउवा जाग ज गोरख जाग्या' तथा 'छतीस युग एक आसन बैठना' गोरख को बताया गया है वह कैसे सम्भव है। इसमें भी काल दोष है। सबद 94 में बताया है 'जाम्भा गोरख गुरु अपारा' जो गलत लगता है। इसमें संभवत: सही 'जाम्भा गुरु अपारा' है। इसी तरह ही सबदवाणी में गोत्राचार को भी लिखा है। यह गलत ही है, क्योंकि गोत्राचार एक वैदक मंत्र है जो आर्य समाज के प्रभाव से लिखा गया लगता है। प्राचीन वाणियों की पोथियों में यह नहीं मिलता है।

गुरु जाम्भोजी ने अपनी वाणी में गोरखनाथ और उनके नाम पर फैले पाखण्ड की कड़े शब्दों में निन्दा की है। मूल शब्द देखिए–

गोरख दीठा सिद्ध न होयबा, पोह उतरिबा पारूं (26)
सिध का पंथ कोई साधु जाणत, बीजा बरत न बहियो (28)
मोरे मन ही मुद्रा तन ही कंथा, जपेउ कारग सह लीयो (29)
नाथ कहावै मर मर जावै, स क्यूं नाथ कहावै (46)
पांच पटण नव थानक साधले, आदिनाथ का भक्तूं (47)
योगी होके मूण्ड मुंडावै कान चिरावै, गोरखहटड़ी धोकै तेपण रहया ईवाणी (50)
घोड़ चोली बाल गोदाई श्रीराम का भाई (63)

उन्होंने कहा नंगे रहने में योग नहीं–

पारब्रह्म की सुध न जाणी तो नागे जोग न पायो (7)

वे पुन: कहते हैं, भांग और मांस खाने में योग नहीं–

नागड़ भांगड़ भूला महियल, जीव हतै मड़ खाईलो (14)

भस्म लगाने में योग नहीं–

आयता काहे काजै खेह भकरूड़ो (45)

कज चिराने और जीव हत्या में योग नहीं–

थे कान चिरखो चिरघर पहरौ, पाखण्ड मोह न कोई।
जटावधारो जीव सिंधारौ आयसां! इहां पाखण्डे जोग न होई (46)

मूंड मूंडाने में भी योग नहीं है–

जोग जुगत की सार न जाणी, मूंड मूंडाया विगूता (117)
म्हे अवधू निरायख जोगी, जोगी रे तूं जुगत पिछाणी,
जुग जागो जुग जा पिराणी, कांय जागंता सोवो,
जुगां जुगां को जोगी आयो, सतगुरु सतपंथ बतायो।
हम ऊनथ नाथ कुमह का मोह मां आण्यां।

हमारे बारे में कोई नहीं जानता–

कुण जाणै म्हे जोगी के भोगी, कुण जाणै म्हे आप संजोगी।

इसलिए हे योगी '**गुरु श्री नाथ डरीलो**'। **म्हे आज संजोगी अवरां पोखी, तत्त महारस**' वाणी आदि कहकर लोगों को चेताया।

जाम्भोजी की वाणी के यह सबद नाथ सम्प्रदाय और प्रसिद्ध नाथों के संदर्भ में कहे गये हैं। उनके 21 सबद तो उनके समकालीन नाथों को और 19 अन्य योगियों को कहे हैं। उनके समकालीन प्रसिद्ध नाथ थे– लोहा पांगल नाथ, लक्ष्मणनाथ, बालानाथ, कवलनाथ आदि। कालान्तर में अनेक लोगों ने जाम्भोजी के सबदों का प्रयोग नाथ सिद्धों की वाणियों में उनके नाम से प्रचारित किया। गोरखनाथ की वाणी में जाम्भोजी के सबदों का प्रयोग देखिये–

महमंद महमंद न कर काजी, महमंद का तो विषय विचारूं।
महमंद हाथ करद जो होती, लोहे घड़ी न सारूं (12)

महमंद महमंद न कर काजी, महमंद का तो बोहत विचारूं,
महमंद साथ पयंबर सीधा, एकलाव असी हजारूं (10)
उतपति हिन्दू जरणा जोगी, अकलि परि मुसलमानी (6)

इसी तरह काणेरीपाव, भरथरी, जालंधर नाथ, चरपदनाथ, हणवंतनाथ और जसनाथ की वाणी में जाम्भोजी की मूल वाणी का प्रयोग हुआ है। कुछ सबदवाणी (120) में नहीं आ पाये हैं। ऐसे सबदों की प्रथम पंक्ति प्रस्तुत है–

1. पंडित जण जण वाद न होई (102)
2. टूटै पवणा छीजै काया (103)
3. देवल यातरा शून्य यातरा (104)
4. आऊं न जाऊं निरंजण नाथ री दुहाई (105)
5. चहुं दिशि जोगी सदा मलंग (106)
6. राज गये को राजा झूरै (107)
7. अवधू शब्द निरन्तर गहियै (126)
8. मूल सींचो रे अवधू मूल सींचो (127)
9. मारिबा तो मन मस्त मारिबा (128)
10. मढि न बांचिबा सती न प्रबोधिबा (129)
11. कोटि मध्य कोई एकहि जूझै (130)
12. तत ऐ स्थलो तत ऐसा लो (131)
13. गृहबा कों नाहीं देख वाको लेख (143)
14. हास्यबा होलवा रहिबा रंग (145)
15. दण्डी सो जो काया दण्डै (146)
16. अवधू संयम अहार कंदरम नहीं व्यापै (147)
17. अजप्पा जपो रे अवधू अजम्पा जपो (148)
18. गगन हमारा बाजा बाजै (149)
19. इमान इलाह आकीन हकबर
20. हरचेदारी सरफ कुं (न) दर राह कुं (न)
21. कवण स मोमिण कवण स माण
22. विसन विसन तूं भणि रे प्राणी, विसन भणतां अनंत गुणूं।
23. सीनान दान करण क्रीया (121)
24. आदे कलमुं भोम्यदागु (122)
25. करसण स्थाने आप कीजंत (123)

हमें उपरोक्त कम प्रचलित सबदों को भी जानना चाहिए। इनका भी भावार्थ करना चाहिए। जाम्भोजी के अन्य अप्राप्त सबदों को भी प्राप्त करना चाहिए।

–डॉ. कृष्णलाल बिश्नोई
बी–111, बिश्नोई भवन, समतानगर,
कृषि उपज मंडी के सामने, बीकानेर (राज.)
मो.: 9460002309

पर्यावरण विशेषांक (जून 2025) के लिए आलेख भेजने बारे निवेदन

जैसाकि सभी सुधी लेखकों, रचनाकारों व पाठकों को विदित है कि हर वर्ष विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर 'अमर ज्योति' पत्रिका द्वारा एक विशेष अंक (पर्यावरण विशेषांक) का प्रकाशन किया जाता है, उसी कड़ी में इस बार भी पत्रिका द्वारा **जून 2025** अंक **पर्यावरण विशेषांक** के रूप में प्रकाशित किया जाएगा। इस अंक को अत्यधिक ज्ञानवर्धक, सूचनाप्रद, रोचक, सामयिक तथा प्रासंगिक बनाने के लिए आप सबका योगदान अतीव आवश्यक है। अत: सभी रचनाकारों व पाठकों से विनम्र अपील है कि वे पर्यावरण के विभिन्न पहलुओं पर सारगर्भित, सामयिक महत्व की रचनाएं जो आध्यात्मिक एवं सामाजिक लेख, कहानी, कविता, संस्मरण, व्यंग्य समेत विभिन्न साहित्यिक विधाओं के रूप में हो सकती हैं, भेजने की कृपा करें। लेखक अपनी रचनाएं 15 मई 2025 तक टाईप या हस्तलिखित रूप में पत्रिका की ई–मेल editoramarjyotipatrika@gmail.com या व्हाटसअप नंबर **94670–90729** पर भेज दें, ताकि समय रहते उन्हें पत्रिका में उचित स्थान दिया जा सके।

–सम्पादक

आंतरिक और बाह्य शुद्धि

जैसा कि सबदवाणी का सार बताता है कि मनुष्य को ऐसी युक्ति या उपाय से जीवन जीना चाहिए जिससे कि जीते जी यश, प्रतिष्ठा सम्मान प्राप्त हो सके और मरणोपरांत मोक्ष की प्राप्ति हो सकें।

मेरे इस लेख का मुख्य विषय 'आंतरिक और बाह्य शुद्धि' है। मेरा प्रयास रहेगा कि मैं मेरे ज्ञान और विवेक के आधार पर इस विषय को समझाने का प्रयास करूंगा।

आंतरिक शुद्धि और पवित्रता: आंतरिक पवित्रता व्यक्ति की आत्मीय शुद्धता को परिलक्षित करती है। गुरु जांभोजी की सबदवाणी और 29 नियमों में आंतरिक और बाह्य शुद्धि पर जगह-जगह बल दिया है। आंतरिक व बाह्य शुद्धि का हमारे जीवन में क्या और कितना महत्व है और यह शुद्धि हमारे जीवन को किस प्रकार प्रभावित करती है। इस विषय पर में चर्चा करने का प्रयास करूंगा।

मुख्य रूप से शुद्धि दो प्रकार की होती है। जल आदि से शरीर कपड़ों और घर की सफाई की जाती है, इसे बाह्य शुद्धि कहते हैं। इसमें हमें नित्य प्रति स्नान, साफ-सफाई, स्वच्छ वस्त्र, दांत-नाखून आदि की सफाई रखते हुए गुटखा, तंबाकू, पान,बीड़ी सिगरेट से पवित्र मुंह को खराब करने से बचना चाहिए और आंतरिक शुद्धि की बात की जाए तो दोनों काल की संध्या, सत्य वचन, अहिंसा, जप और तप व ध्यान से आंतरिक शुद्धि की प्राप्ति होती है।

इस धरती पर निवास करने वाला प्रत्येक मनुष्य चाहे वह किसी भी जाति, धर्म से संबंध रखता हो यदि जांभोजी के बताएं 29 नियमों का पालन करता है तो निसंदेह रूप से उसका जीवन सरल, सरस और सुगम बन जाता है।

गुरु महाराज जांभोजी के 29 नियम और सबदवाणी की शिक्षा वैज्ञानिक आधार, हर समय, काल परिस्थिति और हर युग में समान रूप से उपयोगी सिद्ध होने वाली शिक्षा में से एक है। जिसकी पहली ही बात 'तीस दिन सूतक पांच ऋतुवंती न्यारो सेरा करो स्नान शील-संतोष शुचि प्यारो' को इंगित करती है। जो मनुष्य मात्र के शारीरिक, धार्मिक और मानसिक रूप से अति उपयोगी नियमों के रूप में से एक है। इसमें नव प्रसूता स्त्री को घर के एकांत में रहना, खाने पीने के बर्तन, वस्त्र आदि पृथक रखना, दस दिन तक सूर्य दर्शन नहीं करना, शुद्ध सात्विक भोजन करते हुए नवजात शिशु को दुग्ध पान करवाना पूर्ण रूप से वैज्ञानिक नियम है। आजकल कहीं-कहीं देखने और सुनने में आता है कि मां-बहने या तो ज्यादा पढ़ी-लिखी है या आधुनिक समझदारी के अतिवश इस समयावधि में घर के छोटे-मोटे कार्य करने में लग जाती है। परिणामस्वरूप शारीरिक रुग्णता की शिकार होकर जीवन भर व्याधिग्रस्त हो जाती है और नवजात शिशु के स्वास्थ्य पर भी प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। देखा जाए तो यह 30 दिन की समयावधि जच्चा और बच्चा के स्वास्थ्य का एक प्रकार का बीमा है।

इसी तरह से ऋतुवंती स्त्री का पांच दिन का धर्म स्वास्थ्य लाभ प्रदान करने के साथ-साथ घर की पवित्रता में सहायक है। वर्तमान तथाकथित आधुनिकता की शिकार माताएं-बहनें इस नियम का पालन पूर्ण समय के साथ नहीं करती है जिससे उनको कहीं ना कहीं भारी दोष लगता है।

'मास एक सूतक कहूं, रजस्वला दिन पांच।
जो इनको पाले नहीं, लगे धर्म की आँच॥'

इसी नियम को समझाते हुए विल्होजी महाराज ने कहा है- '**ऋतुवंती हुए नार पलो नहीं छूइये।**
पांचू कपड़ा धोय, न्हाय शुद्धि होइए॥
स्त्री छोत होवे रजवंत, संग न करे और रहे एकंत।
पांचवें दिन होवे पाक, कपड़ा धोय करें हरि जाप॥'

इसी तरीके से बाह्य और आंतरिक शुद्धि को और परिभाषित करते हुए गुरु महाराज ने 'सेरा करो स्नान' के बारे में भी बताया है। यहां मैं आपका ध्यान स्नान के प्रकारों के विषय की ओर आकर्षित करना चाहूंगा। नित्य प्रति स्नान करने से शरीर की बाह्य सफाई होती है और शारीरिक स्फूर्ति के साथ सुख की अनुभूति होती है रात्रि कालीन दोषों के साथ दरिद्रता और आलस्य से मुक्ति मिलती है।

इसके अतिरिक्त स्नान के पांच प्रकार होते हैं जो बाह्य शुद्धि के अतिरिक्त आंतरिक शुद्धि प्रदान करते हैं।

1. जप स्नान जप स्नान में विष्णु भगवान के नाम का जप किया जाता है जो प्राय: हमारे बुजुर्ग शारीरिक स्नान के

साथ भी करते हैं, जो आज की पीढ़ी में देखने को नहीं मिलता है।

2. तप स्नान तप स्नान दोनों काल की संध्या को रेखांकित करता है। जिससे अंत:करण की वृति को सांसारिक विषय -विकारों से हटाकर कुछ समय परमात्मा से जुड़ने का समय होता है। इससे आत्मीय शुद्धि या आंतरिक शुद्धि का लाभ मिलता है।

3. इंद्रिय स्नान आंख, कान नाक आदि को वश में रखना, इंद्रिय स्नान कहलाता है। जिससे हम किसी गलत दृश्य को देखने, सुनने और गलत विचारों के उत्पन्न होने से अपने आप को बचा सकते हैं।

4. दया स्नान दया स्नान धर्म का मूल है।

'दया धर्म का मूल है पाप मूल अभिमान।
मनुज दया न छोड़िए, जब लग घट में प्राण॥'

अर्थात् हमेशा सभी प्राणियों पर जो अनुग्रह करता है, उसी का नाम दया है।

मनुष्य मात्र को चाहिए कि वह हमेशा जीव हिंसा से निवृत रहे, पराया धन हरण करने से बचें, सत्य वचन बोलें, समय पर यथाशक्ति दान करें, पर स्त्री की कथा में मौन रहे और नियमित कार्यों को न छोड़ते हुए मनुष्य को अपना कल्याण का मार्ग अपनाना चाहिए।

5. जल स्नान जल स्नान वह स्नान है जिससे हम शरीर की सफाई रखते हुए सुखद और रोग रहित जीवन-यापन कर सकते हैं।

उनतीस नियमों की आचार संहिता में आंतरिक शुद्धि के लिए शील का पालन करना और संतोष धारण करना अपने आप में महत्वपूर्ण है। शील अर्थात् चरित्र जिससे हम न केवल स्वयं की बल्कि अपने खानदान अर्थात् कुल की मर्यादा को बचाए रखने में सफल होते हैं।

नीतिशतक में भर्तहरि एक जगह लिखते हैं- **'येषाम न विद्या न तपो न दांनम, ज्ञानम न शीलम् न गुणों न धर्म:। ते मृत्युलोके भुविभारभुता, मनुष्य रूपेण मृगांश्चरंति॥'**

अर्थात् जो मनुष्य ज्ञान विहीन है, तपस्वी नहीं है, दानी नहीं है, ज्ञानी नहीं है, शीलवान नहीं है, गुणी नहीं है और धर्म युक्त आचरण नहीं करता है- वह मनुष्य मृत्यु लोक में पृथ्वी पर भार स्वरूप है। मनुष्य के रूप को धारण किए हुए वे वास्तव में पशुस्वरूप ही विचरण करते हैं।

नियम नंबर पांच बाह्य और आंतरिक पवित्रता रखने पर प्रकाश डालता है शुचि प्यारो- जिसका अर्थ है स्वच्छ, निर्दोष व पाप रहित जीवन जीना।

'मन: शौचम, कर्म शौचम्, कुल शौचम च भारत।
शरीर शौचम वाक शौचम पंच विद्यम स्मृतम॥'

अर्थात् भगवान की भक्ति और उपासना के द्वारा मन के सब संकल्प-विकल्प रूपी विकारों को मिटा देना मन शौच कहलाता है।

वर्जित कार्य न करना और कुल की मर्यादा के अनुसार चलना कुल शौच कहलाता है।

शौच अर्थात् बाहर-भीतर की सफाई से बुद्धि मंज जाती है। मन प्रसन्न तथा स्थिर हो जाता है। जिससे मनुष्य को इस संसार का वास्तविक सत्य-मृत्यु का हमेशा भान रहता है और मनुष्य सदकार्य और सदवृति में लीन रहकर धर्मानुसार कार्य करते हुए जीवन यापन करता है।

यद्यपि बिश्नोई समाज हिंदू वैदिक धर्म का ही एक अंग है, लेकिन अहिंसा, आंतरिक और बाह्य पवित्रता, जीव दया, पर्यावरण रक्षा इसे और विलक्षण बनता है।

कोई भी धर्म व सिद्धांत आचरण के बिना फलदायक नहीं होता है। अत: बिश्नोई धर्म और पंथ को जब तक हम आचरण में नहीं लाएंगे तब तक धर्म से कोई लाभ प्राप्त होने वाला नहीं है। हमारे पूर्वज श्रद्धापूर्वक और सतर्कता से धर्म का पालन करते थे। आज का मानव सुख प्राप्ति, विलासिता और भौतिक पदार्थों की चाहत में धर्म का दिखावा करने लग गए हैं। जिससे हम आने वाली पीढ़ी को एक बिगड़े हुए धर्म का रूप देने में कामयाब हो सकते हैं। यह हम सभी के लिए सोचनीय और विचारणीय बिंदु है। यदि धर्म में कट्टरता, कठोरता और अनुशासन जैसे नियमों और सिद्धांतों की वास्तविकता नहीं रही तो आने वाली पीढ़ी धर्म से कोसों दूर हो जाएगी।

अंत में मैं विचारों की शुद्धि के बारे में लिखते हुए मेरी कलम को विराम दूंगा- व्यक्ति चाहे जिस किसी भी क्षेत्र में कार्य कर रहा है, उसके कार्य का फल उस व्यक्ति के मन के विचारों पर निर्भर करता है। हम यदि हमारे घर की बात करें तो हमारे घर में किस तरह की बातें होती है, परिवार के सदस्यों के वार्तालाप का तरीका क्या है, घर में किस प्रकार के विचारों वाले लोग आते-जाते हैं, हमारा

संपर्क किस प्रकार के विचारों वाले व्यक्तियों से हैं। यह सब बातें परिवार में पोषित होने वाले उन नन्हे-मुन्ने समाज के अभिन्न अंगों पर गहरा प्रभाव डालती है। घर में विकास और प्रगति तथा शिक्षा और धर्म की बात होगी तो परिवार में प्रगति और आध्यात्मिकता का माहौल बनेगा और अनैतिक विचारों की बातें होगी तो घर का वातावरण दूषित होगा।

पति-पत्नी दोनों के बीच प्रेम और विश्वास है तो उनकी संतान अच्छी होगी और पति-पत्नी के बीच कल्ह और अविश्वास है तो उत्पन्न होने वाली संतान विविध मानसिक विकृतियों की शिकार होगी। इस प्रकार के परिवार में हमेशा नेगेटिव वाइब्रेशन रिलीज होता है। परिवार का वातावरण हमेशा नेगेटिव बना रहता है। ऐसे वातावरण में पलने वाली संतान नेगेटिव एनर्जी ग्रहण करती है और ऐसी संतान फिर आगे जाकर के नशा और अपराध व अनैतिक कार्यों में लिप्त हो जाती है। जैसे-जैसे बच्चा बड़ा होता है वैसे-वैसे उसके सुधारने की चिंता बढ़ती जाती है। सारे प्रयास सफल हो जाने के बाद अंत में घर वालों के पास एक ही विकल्प रहता है कि विवाह कर दिया जाए तो हो सकता है सुधर जाएगा। अब वही बिगड़ेल संतान समाज की एक और प्रतिभा का जीवन बर्बाद करती है और फिर परिवार के दु:ख का कारण बनती है और ऐसे लोगों से उत्पन्न संतान समाज के संकट का कारण बनती है और ऐसे चुनिंदा लोगों की वजह से ही कहीं-कहीं समाज को नीचे देखना पड़ता है। इसलिए आज जरूरत है तो बस इस बात की है कि स्वयं और स्वयं के परिवार को सुधारने का प्रयास करें समाज अपने आप सुधर जाएगा।

-जयकिशन सियाक भैरुड़ी
(प्रतिभा हॉस्टल डूंगरी)
मो. 6377789073

---

ekr fnol ij

माँ संवेदना है, भावना है, अहसास है माँ।
माँ जीवन के फूलों में खुशबू का वास है माँ॥
माँ रोते हुए बच्चे का खुशनुमा पलना है माँ।
माँ मरूस्थल में नदी या मीठा सा झरना है माँ॥
माँ लोरी है, गीत है, प्यारी सी थाप है माँ।
माँ पूजा की थाली है, मंत्रों का जाप है माँ॥
माँ आंखों का सिसकता हुआ किनारा है माँ।
माँ गालों पर पप्पी है, ममता की धारा है माँ॥
माँ झुलसते दिनों में कोयल की बोली है माँ।
माँ मेहंदी है, कुमकुम है, सिंदूर की रोली है माँ॥
माँ कलम है, दवात है, स्याही है माँ।
माँ परमात्मा की स्वयं एक गवाही है माँ॥
माँ त्याग है, तपस्या है, सेवा है माँ।
माँ फूंक से ठंडा किया हुआ कलेवा है माँ॥
माँ चूड़ी वाले हाथों पे मजबूत कंधों का नाम है माँ।
माँ काशी है, काबा है और चारों धाम है माँ॥
माँ चूल्हा, धुआं, रोटी और हाथों का छाला है माँ।
माँ जिंदगी की कड़वाहट में अमृत का प्याला है माँ॥

-ओ३म् व्यास

बधाई संदेश

विजयलक्ष्मी बिश्नोई सुपुत्री श्री प्रेम सिंह लोहमरोड़ (दोहती श्री कृष्ण बैनीवाल, पूर्व सरपंच आदमपुर) निवासी गांव ठरवा, तह. टोहाना, जिला फतेहाबाद ने यूपीएससी की परीक्षा पूरे भारतवर्ष में 233वां रैंक प्राप्त कर उत्तीर्ण की है।

दिनेश बैनीवाल सुपुत्र श्री हापु राम बैनीवाल निवासी गांव गुड़ाहेमा, तह. चितलवाना, जिला जालौर ने यूपीएससी की परीक्षा पूरे भारतवर्ष में 265वां रैंक प्राप्त कर उत्तीर्ण की है।

दिनेश बिश्नोई सुपुत्र श्री भवरूराम गोदारा निवासी गांव नगरासर, तह. कोलायत, जिला बीकानेर वर्तमान महेश नगर, लालसागर, जोधपुर ने यूपीएससी की परीक्षा पूरे भारतवर्ष में 319वां रैंक प्राप्त कर उत्तीर्ण की है।

सुग्रीव पंवार सुपुत्र श्री ओमप्रकाश पंवार निवासी नई मंडी, घड़साना, जिला श्रीगंगानगर (राज.) की वरिष्ठ अध्यापक (अंग्रेजी) से प्राध्यापक (राजनीति विज्ञान) के पद पर पदोन्नति हुई है।

डॉ. पुष्पा रानी सुपुत्री श्री मांगे राम थापन निवासी मण्डी आदमपुर, जिला हिसार का चयन गुरु जम्भेश्वर विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, हिसार के पर्यावरण विज्ञान एवं इंजीनियरिंग विभाग में सहायक प्रोफेसर के पद पर हुआ है।

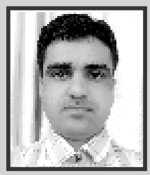

डॉ. रामस्वरूप सुपुत्र श्री ठाकुर राम जंवर निवासी गांव जैसलां, तह. फलोदी, जिला जोधपुर (राज.) का चयन गुरु जम्भेश्वर विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, हिसार के गुरु जम्भेश्वर जी महाराज धार्मिक अध्ययन संस्थान में सहायक प्रोफेसर के पद पर हुआ है।

रेनू सुपुत्री श्री सन्त कुमार पुनिया निवासी गांव बड़वा, तह. सिवानी, जिला भिवानी ने भारतीय कंपनी सचिव संस्थान, दिल्ली से कंपनी सचिव परीक्षा (CS) उत्तीर्ण की है।

निकिता सुपुत्री श्री पुखराज बिश्नोई निवासी पनावली ग्राम पंचायत रामजी का गोल, तह. गुड़ामालानी, जिला बाड़मेर, राज. ने गायत्री शांतिकुंज हरिद्वार द्वारा आयोजित भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा-2025 द्वारा आयोजित परीक्षा में तहसील स्तर पर प्रथम स्थान प्राप्त किया है।

आप सबकी इन उल्लेखनीय उपलब्धियों पर बिश्नोई सभा, हिसार व अमर ज्योति पत्रिका परिवार की ओर से हार्दिक बधाई व उज्ज्वल भविष्य की शुभकामनाएँ।

l p

सच...
हमेशा कड़वा होता है, लेकिन क्यों.... ?
क्योंकि उसका पहला घूंट
स्वयं को पीना होता है;
और सत्य का अमरत्व सभी प्रियजनों को।
सच हमेशा झूठ के साथ
चलता है, छाया की तरह
लेकिन मिलकर कदापि नहीं;
ये सच की कठोरता,
नैतिकता एवम् कूटनीतिज्ञता
पर आधारित है।

-महर्षि सुषैन

भाग-19 जांभोजी ने जाट को सुनाया 15वाँ सबद

13वाँ और 14वाँ सबद सुनकर।
बोला वो जाट घणा विनम्र होकर॥
जाट कहै सत्य सद्गुरु थारी बात।
झूठ कपट वासना, हरो निज तात॥
तब गुरु जम्भेश कहै 15वाँ सबद।
किस्मत जाट की गुरुश्री उपलब्ध॥

15वें सबद आधारित रचना

सबद 15वें में कहै गुरुश्री जम्भेश्वर,
जीवन के मूल कर्तव्य कहै परमेश्वर।
गुरु के गुण लक्षण र उनकी श्रेष्ठता,
ईश कृपा मोक्ष प्राप्ति कहै सर्वेश्वर॥

हम श्वास-प्रश्वास में सर्द ब्रह्म रूप,
महीन (झीणी) वाणी रहते सुनते।
हम (जम्भेश्वर) भूल कर भी कभी,
मिथ्या (व्यर्थ) भाषण नहीं करते॥

ज्यूँ वर्षा संतप्त धरा को सींचती है,
त्यूँ दु:खी प्राणियों के दुख करो दूर।
ऐसे ही वृक्ष को सींचो जो मूल संग,
मीठा और लाभदायक होवै भरपूर॥

सद्गुरु श्री जम्भेश्वर जी कहते हैं,
हे लोगो! तुम पेड़ के पत्तों में भूले।

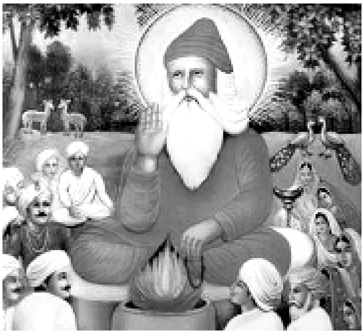

उसके मूल की खोज नहीं करते,
व्यर्थ दिखावे में भटक रहे हो भूले॥

सार वस्तु थारा जाता नहीं ध्यान,
मूल मूल सिंचण का होता ज्ञान।
तो सुमूल (भली मूल) नै सींचिये,
कु मूल सींचने का करो ना ध्यान॥

ऐसा करने प्राप्त होगा विष फल,
स्पष्ट भक्ति तुम्हारी हो निष्फल।
कुमूल अर्थात् कुल क्या हो लाभ,
सुफल से जीवन में होवै सफल॥

आगे गुरु श्री जीवन मूल बतावै हैं,
विष्णु विष्णु जप गुरु समझावै है।
काम क्रोधादि अजर शत्रुओं को,
वश करो मूल कर्तव्य बतलावै है।
मूल सींचने से जीवंत मुक्ति पावै है॥

सुनो हे प्राणी! तुम ऐसे विज्ञानी,
ज्ञान-गम्भीर और कैवल्य ज्ञानी।
अनन्त गुणवान पुरुष को खोज,
गुरु ही ऐसा है महिमावान ज्ञानी॥

गुरु ही है जो दु:खी और संतप्त,
शीतल जल सम करता है तृप्त।
गुरु ही तो स्वरूप प्राणदायक है,
गुरु ही संतोषी अर जीवन-मुक्त॥

गुरु है जो मेवों का होता मेवा है,
संतोषी अंत:करण वाला मेवा है।
गुरु तो जीवन हित सर्वश्रेष्ठ है,
वे आश्रयों के भी आश्रय देवा है॥

हे प्राणी! तेरी जीवन नौका को,
संसार सागर से पार लंघाता है।
'पृथ्वीसिंह' गुरु ही जीवन नौका,
का सही में खिवैयां हो सकता है।
गुरु कृपा से मोक्ष पा सकता है॥

-पृथ्वीसिंह बैनीवाल बिश्नोई
राष्ट्रीय सचिव, जांभाणी साहित्य अकादमी, बीकानेर; राष्ट्रीय प्रैस प्रभारी, अ.भा. जीवरक्षा बिश्नोई सभा, अबोहर
313, सेक्टर 14, हिसार
मो.: 9518139200

गुरु कृपा

अंधकार से खींचकर
अंधकार से खींचकर, मन में भरे प्रकाश,
ज्यों मैली चुनरी धुले, सोहत तन के पास।

गुरु की कृपा हो शिष्य पर, पूरन हों सब काम,
गुरु की सेवा करत ही, मिले ब्रह्म का धाम।

गुरु अनंत तक जानिए, गुरु की ओर न छोर,
गुरु प्रकाश का पुंज है, निशा बाद का भोर।

मनुष्य जीवन दुर्लभ है

ईश्वर जीव को किसी सद्उद्देश्य के साथ इस संसार में भेजता है। लेकिन हम वह बन जाना चाहते हैं, जो बनने के लिए बने ही नहीं। उस अलभ्य को प्राप्त करने की चाहत में हम शक्ति, श्रम, ऊर्जा, सामर्थ्य, पराक्रम, समय, पुरुषार्थ सहित सब क्षमताओं का अपव्यय कर बैठते हैं। फिर भी हाथ कुछ नहीं लगता सिवाय निराशा, पश्चाताप, उपेक्षा और आत्मग्लानि के।

ईश्वर जीव को बार-बार वही बनाता है, जिसके लिए उसे बनाया गया है। अर्थात् जिसके प्रारब्ध में संगीतकार बनना लिखा है, वह चिकित्सक, विचारक, साहित्यकार, एडवाइजर, इंजीनियर और कलाकार नहीं बन सकता। यदि चाहे भी तो कुछ दिनों के प्रायोगिक परीक्षण के बाद वह थका-हारा स्वयं को सर्वथा असमर्थ मानकर फिर से संगीत में ही सुख और शांति का आश्रय तलाशेगा।

अंततः वही उपलब्धियों का कारक बनेगा। यदि हम दूसरे, तीसरे व चौथे व्यवसाय, कार्य, व्यापार, पद व मंच पर सफल होने का दंभ भरते हैं तो सहज रूप में पनपी नैसर्गिक अभिरुचि वाले क्षेत्र में भी उपलब्धियों के शिखर को क्यों नहीं स्पर्श कर सकते? जब-जब हम देव निर्धारित विधान को चुनौती देकर स्वयं निर्देशित मार्ग की ओर बढ़ने का प्रयास करते हैं तो असफलताएं सर्पदंश की तरह सामने खड़ी रहती हैं। इसके विपरीत ईश्वर द्वारा सुझाए गए मार्ग पर चलने से विपरीत स्थितियां भी स्वतः अनुकूल होती जाती हैं और ऊंचे मुकाम तक पहुंचाती हैं।

देव कृपा से ही असमर्थता सामर्थ्य में, अक्षमता क्षमता में, विपरीतता अनुकूलता में और जटिलता सहजता में बदलती चली जाती है। जो हम होना चाहते हैं, उस मार्ग में सफलता, सुख और आनंद की कोई गारंटी नहीं, लेकिन जो कार्य प्रभु की अनुकंपा और निर्देश में संपन्न होते हैं, सफलता स्वतः ही उनकी आधारशिला बन जाती हैं।

अशांति, परेशानियां तब शुरू हो जाती हैं। जब मनुष्य के जीवन मे सत्संग नहीं होता- मनुष्य जीवन को जीता चला जा रहा है। लेकिन मनुष्य इस बारे में नहीं सोचता की जीवन को कैसे जीना चाहिये- जीवन मिला था, प्रभु का होने और प्रभु को पाने के लिए। लेकिन मनुष्य माया का दास बनकर माया की प्राप्ति के लिए इधर-उधर भटकने लगता है। इस तरह मनुष्य का यह कीमती जीवन नष्ट हो जाता है, जीवन को मनुष्य व्यर्थ मे गवां देता है। मनुष्य देह पाकर ही भक्ति का पूर्ण आनंद और भगवान की सेवा और हरि कृपा से सत्संग का सान्निध्य मिलता है। संतों के संग से मिलने वाला आनंद तो बैकुण्ठ मे भी दुर्लभ है-

राम बुलावा भेजिया, दिया फकिरा रोय,
जो सुख साधू संग में, सो बैकुंठ न होय!!

रामचरितमानस मे भी लिखा है कि-

तात स्वर्ग अपवर्ग सुख धरि तुला एक अंग,
तुल न ताहि सकल मिलि जो सुख लव सत्संग।

'हे तात! स्वर्ग और मोक्ष के सब सुखों को तराजू के एक पलड़े में रखा जाये। तब भी वे सब सुख मिलकर भी दूसरे पलड़े में रखे हुए उस सुख के बराबर नहीं हो सकते, जो क्षण मात्र के सत्संग से मिलता है।' सत्संग की बहुत महिमा है, सत्संग तो वो दर्पण है जो मनुष्य के चरित्र को दिखाता है और साथ-साथ चरित्र को सुधारता भी है। सत्संग से मनुष्य को जीवन जीने का तरीका पता चलता है। सत्संग से ही मनुष्य को अपने वास्तविक कर्तव्य का पता चलता है। मानस में लिखा है कि-

सतसंगत मुद मंगल मुला,
सोई फल सिधि सब साधन फूला।

सत्संग सब मंगलों का मूल है। जैसे फूल से फल और फल से बीज और बीज से वृक्ष होता है। उसी प्रकार सत्संग से विवेक जागृत होता है और विवेक जागृत होने के बाद भगवान से प्रेम होता है और प्रेम से प्रभु प्राप्ति होती है- **जिन्ह प्रेम किया तिन्ही प्रभु पाया**- सत्संग से मनुष्य के करोड़ों-करोड़ों जन्मों के पाप नष्ट हो जाते हैं, सत्संग से मनुष्य का मन, बुद्धि शुद्ध होती है- सत्संग से ही भक्ति मजबूत होती है।

भक्ति सुतंत्र सकल सुखखानि बिनु सत्संग न

पावहि प्राणी' भगवान की जब कृपा होती है, तब मनुष्य को सत्संग और संतों का संग प्राप्त होता है। 'गिरिजा संत समागम सम न लाभ कछु आन बिनु हरि कृपा न होई सो गावहि वेद पुरान। एक क्षण का सत्संग भी दुर्लभ होता है और एक क्षण के सत्संग से मनुष्य के विकार नष्ट हो जाते हैं।

एक घड़ी आधी घड़ी आधी मे पुनि आध।
तुलसी संगत साध की हरे कोटि अपराध॥

सत्संग में बतायी जाने वाली बातों को जीवन में धारण करने पर ही आनंद की प्राप्ति और प्रभु से प्रीति होती है। आज मनुष्य की मन और बुद्धि विकारों में फंसती जा रही है।

मनुष्य हर पल चिंतित रहने लगता है और हमेशा परेशान रहता है। इन सबका कारण अज्ञानता है। भगवान ने यह अनमोल रत्न मानव जीवन अशांत रहने के लिए नहीं दिया। जब भगवान ने यह मानव जीवन दिया और इस मानव जीवन को सफल कैसे करना है। यह हमें सत्संग और शास्त्रों से पता चलता है। इसलिए जीवन से सत्संग को अलग नहीं करना चाहिये। क्योंकि जब सत्संग जीवन में नहीं रहेगा तो संसार के प्रति आकर्षण बढ़ेगा ओर संसार के प्रति मोह मनुष्य के जीवन को विनाश की तरफ ले जाता है। सत्संग की अग्नि में मनुष्य के सारे विकार नष्ट हो जाते हैं- 'आनंद कहीं बाहर नहीं है, वो भीतर ही है। लेकिन मनुष्य ने मन के चारों तरफ संसार के मोह की चादर लपेट रखी है।

इसलिए वो आनंद ढक जाता है और महसूस नहीं होता और जब सत्संग से वो मोह रूपी चादर हट जाती है। तब आनंद ही आनंद मिलने लगता है। जैसे मूर्तिकार पत्थर को तराशता है और पत्थर से गंदगी हटाकर उसे मूर्ति का रूप देता है। उसी प्रकार जीवन में जो अशांति, परेशानी, विकार आदि रहते हैं। उनको सत्संग हटा देता है और मनुष्य का एक निर्मल चरित्र बना देता है।

जाने बिनु न होई परतीति, बिनु परतीति होई नहीं प्रीती, भगवान के प्रति पूर्ण समर्पण तब तक नहीं होगा।

जब तक विवेक नहीं होगा और 'बिनु सत्संग विवेक न होई' मनुष्य का कर्तव्य क्या और अकर्तव्य क्या। यह सब सत्संग से पता चलता है। भागवत के ग्यारहवें स्कंध मे भगवान उद्धव से कहते हैं कि संसार के प्रति सभी आसक्तियां सत्संग नष्ट कर देता है। भगवान कहते हैं कि हे उद्धव, मैं यज्ञ, वेद तीर्थ, तपस्या, त्याग से वश में नहीं होता। लेकिन सत्संग से मैं जल्दी ही भक्तों के वश में हो जाता हूँ। 'इसलिए सत्संग की बहुत महिमा है। जीवन में सत्संग को हमेशा बनाए रखना चाहिये और जब भी, जहां भी सत्संग सुनने या जाने का मौका मिले तो दुनियां वालों की परवाह किये बिना ही पहुँच जाना चाहिये क्योंकि सत्संग बहुत दुर्लभ है और जिसे सत्संग मिलता है उस पर विशेष कृपा होती है भगवान की।'

-नारायण राम जांगू विश्नोई
फतेहसागर, लोहावट, फलोदी,
मो.: 8619520326

मित्र

क्या गलत और क्या ही सही,
हर वक्त जो साथ खड़ा मित्र वही....

सुख का साथी कोई साथी नहीं,
विपत्ति में हो साथ खड़ा मित्र वही...

पल-पल दुनिया औकात दिखाती रही,
हर औकात में जो साथ हो मित्र वही...

भले ही रिश्ते-नाते हों हजार सही,
हो रिश्ते-नातों से भी ऊपर मित्र वही...

नि:स्वार्थ प्रेम भाव, छल फरेब नहीं,
जिससे मिले दिल सच्चा मित्र वही...

हो विष-सी यह सारी दुनिया भले ही सही,
लागे जो संजीवनी बूटी-सा, मित्र वही...

लिखूँ मित्र पर जितना भी लागे कम वही,
लिखने पर बन जाए ग्रन्थ, है प्रिय मित्र वही...

-पीयूष बिश्नोई
धामपुर, बिजनौर (उ.प्र.)
महामंत्री, श्री गुरु जम्भवाणी प्रचार संघ (रजि.)
मो.: 8439753638

श्री जम्भेश्वर वर्णमाला

अ से- अनंत कला अवतार, प्रगटे घर लोहट के द्वार।
श्री जंभेश्वर नाम कहाए, बारह को तारन को आए॥
आ से- आदि पुरुष थे कश्यप, वही बने अब लोहट क्षत्रप।
अदिति बनी हांसा भटियानी, रचने कलि अवतार कहानी॥
इ से- इति ना! अब अथ होगा, समराथल पर नव रन होगा।
दिति के दैत्यों का संहार, स्वयं करेंगे पालनहार॥
ई से- ईश अवतरन कारन, रहा एक था अन्य विभीषन।
देव संस्कृति यहां मिटाने, यवनी थे खंजर को ताने॥
उ से- उपहत रहते ठाकुर, द्रव्य धान पशुधन प्रचुर।
फिर भी चिंतित रहते प्रान, घर सूना था बिन संताना॥
ऊ से- श्री ऊदोजी नैण, भले लगे साखी के बैन।
कवि जांभाणी श्रेष्ठ हजूरी, गाई महिमा भूरी-भूरी॥
ए से- एक ब्रह्म की माया, जीव ब्रह्म ना भेद बताया।
पूछा! श्री ऊधो कान्हावत, जंभ कही यह सूक्ष्म भागवत॥
ऐ से- ऐसे थे गुरु बाबा, रिंद रोही में माऊ ढ़ाबा।
देकर तिनके पानी धान, महाकाल का किया निदाना।
ओ से- ओळखियो तब प्रोहित, ब्रह्म शब्द बोले जब सद्चित।
बालक को दे गुरु सम्मान, स्वयं बने उनके यजमाना॥
औ से- औकार नाम प्रणवाक्षर, करते काज सही सिद्धेश्वर।
समारंभ हो लेकर नाम, सहज सफल होते सब कामा॥
अं से- अंतर्मन की जाने, अंतरंग को भी पहचाने।
अपने जन को कहीं सताए, तो प्रभु जाकर तुरत उबारे॥
क से- श्री कंकेड़ी धाम, आसन समरा श्री निष्काम।
सहते तन पर शीत औ घाम, मास बारहों आठों याम॥
ख से- खान बड़े सुलतान शाह सिकंदर महमद खान।
चल कर जंभ शरण में आए, नियम सभी उंतीस निभाए॥
ग से- गऊ चराई ईस, उम्र तास थी तब चौंतीस।
स्वर्ग पिताश्री किये प्रयान, समरा आप विराजे आना॥
घ से- जो घट-घट के भीतर, रहा समाएं सर्व निरंतर।
अड़सठ तीरथ हृदय उसी में, क्या ढूंढे काबा कासी में॥
च से- चार कवि विद्वान, अल्लू, तेजो, कोल्हू कान्ह।
भक्त चतुर चारों गुणबान, किये कवित्त महिमा के गाना॥
छ से- छवि देखी लोहट सुत, छांह छेह ना लगते अद्भुत।
ना गड़ सूंधी ना आहार, फिर भी स्वस्थ लगे सुकुमार॥
ज से- जांभोळाव सुतीरथ, प्रगटाए श्री जंभ भगीरथ।
जो न्हाए जीवन फल पाए, जनम जनम के पाप नशाए॥
झ से- श्री झींझाळा धोरा, कंसवें को माना सिरमोरा।
जब सहसा पाया अभिमान, रोया पड़ चरणा में आना॥
ट से- टीले पर थे टाबर, देखा हर ले जाते डांगर।
गवालों ने मिल हल्ला बोला, चोर छोड़कर भागे टोला॥
ठ से- ठाकुर, चारण, भाट, परचे योगी ब्राह्मण जाट।
दुर्व्यसनों का कर परित्याग, उंतीस नियम की लागी लाग॥
ड से- डरे न! सहली मार खड़े, एक सो आठ हजार।
मौत गुणावति नगरी झेली, टीपरि तेल दिया ना तेली॥
ढ़ से- ढोसी नाम पहाड़ी, उसे हिलाना आसणपधारी।
आसन बैठे कपट करेगा, नहीं सहज पथ वह पाएगा॥
त से- तांतू बुआ उधारन, कहयो मंत्र भवसागर तारन।
करते नमन मंत्र का जाप, मिले मोक्ष (कटते) भव पाप॥
थ से- कभी थांवले ग्राम, होना था निश्चित संग्राम।
जांभो जी आए ओ ढ़ाबा, होने वाला खून खराबा॥
द से- श्री दूदा मेड़तिया, खोया राज्य! फिरे मन दुखिया।
देकर खांडा केर निदान, अटल राज्य पाया वरदान॥
ध से- धन्य धरा रोटू की, सुधरी जहां ऊमा भादू की।
भात भराने आए ईश्वर, संग लिए के (ई) बड़े अधीश्वर॥
न से- थे नाड़ी नेबाण, खुदवाए, बरसंग बिणियाळ।
पीढ़ी सात तभी संतान, उधरेगी पाया वरदान॥
प से- श्री पूल्होजी चाचा, प्रभु से खरे सम्हाले वाचा।
प्रथम पंथ में किये प्रवेश, पंथ चला फिर देशो देश॥
फ से- फल: वृद्धि का नगरी, जहां राव हम्मीर की बिगरी।
आए जंभ सरोवर नहाए, आधि-व्याधि सब दूर नशाए॥
ब से- श्री बीदा जोधावत, ना पहचाना जंभ परमतत्।
बना ऊंट! जब खोया नरतन, ढोया भार मिटा भवबंधन॥
भ से- भक्त राज पहराज, सति में पंथ चलाए आद।
वही पंथ कलि में दरशाए, युक्ति मुक्ति की राह सुझाए॥
म से- मेघवाल था मोती, जागी जंभ भक्ति की ज्योती।
उसे सताया बीदो राव, आए जंभ अरु किया बचावा॥
य से- यम राजा की फांसी, सहज छुड़ाए शब्द उपासी।
शब्द सुनाए कूंची बाला, खुलता सहज स्वर्ग का ताला॥
र से- रावण गोयंद झोर, चोरी करे! चोर बड जोर।
पड़ी मुसीबत शरण पठाए, फिर चोरी की सौगन खाए॥

ल से– लालासर की साथरि, अंतिम चिरत दिखाए श्री हरि।
त्याग यहां साकार रूप को, किया गमन था निराकार को॥
व से– वीरां चारणि दान, मांगा ऊंट, करूं यश गान।
यश वाणी ना लगे लुभानी, प्रभु मांने अनहद की वाणी॥
श से– शांति शाह नवाब, जंभ नाम से लगा लगाव।
उंतीस नियम से उनकी प्रीती, चले पंथ जांभाणी रीती॥
ष से– षडदर्शन हम पाते, शब्द वाणि में सभी समाते।
उठकर प्रात पाठ जो करते, मानो वेद शास्त्र हैं पढ़ते॥
स से– सहजो! सुरजी बाई, बसे दूर जहां गंगा माई।
गुरुदेव की भक्त अनन्या, आती समरा हर (अ) मावस्या॥

क्ष से– ना क्षीरोदधिवास, बसता ना बैकुण्ठ विलास।
हरि चर्चा के चले प्रसंग, रहता वहीं! वहीं उन संग॥
ह से– हासम-कासम दर्जी, पाहल लिया! लिया मन मर्जी।
समराथल धोरे पर आते, गुरु देव का वचन निभाते॥
त्र से– त्रिगुणी माया स्वामी, श्री जंभेश्वर अंतर्यामी।
करते उत्पति करे संहार, वे ही जग के पोषण हारा॥
ज्ञ से– गुरु ज्ञानास्त्र उठाया, समराथल रन भूमि बनाया।
दुर्मति दानव का संहार, किया सहज ज्ञानास्त्र प्रहार॥

–तेजमाल खिलेरी
श्री जाम्भोलाव धाम क्षेत्र, शिमला
मो.: 8529455279

चिंता या टेंशन (कविता)

चिंता और चिता में सिर्फ,
एक बिन्दी का फर्क होता है।
चिंता की एक बिन्दी,
बगरा देती है आपकी चिंदी।
चिंता करते-करते इंसान,
चिता तक पहुंच जाता है।
ऐसे ही टेंशन और टशन में,
अंतर होता है।
टशन होने पर आप,
जिंदगी से मुकाबला करते हो।
और टेंशन होने पर,
जिंदगी में हारते हो।
टशन से हम हर तरफ,
आगे बढ़ते हैं।
और टेंशन में पतन होता है।
इसलिए टशन रखो,
टेंशन नहीं।
चिंता, चिता वाली नहीं,
बल्कि निराकरण वाली करो।

–श्रीमती संगीता बिश्नोई
आजाद वार्ड, स्टेशन रोड,
तह. गाडरवारा, जिला नरसिंहपुर (म.प्र.)
मो.: 9893876631

लोभ व्याधि है

वनवास के दौरान यक्ष ने युधिष्ठिर से अनेक प्रश्न किए। उनसे एक प्रश्न किया गया कि किन-किन सद्गुणों के कारण मनुष्य क्या-क्या फल प्राप्त करता है और मानव का पतन किन-किन अवगुणों के कारण होता है?

युधिष्ठिर ने बताया, 'वेद का अभ्यास करने से मनुष्य श्रोत्रिय होता है, जबकि तपस्या से वह महत्ता प्राप्त करता है। जिसने मन पर नियंत्रण कर लिया, वह कभी दु:खी नहीं होता। सद्पुरुष की मित्रता स्थायी होती है। अहंकार का त्याग करने वाला सबका प्रिय होता है। जिसने क्रोध व लोभ को त्याग दिया, वह हमेशा सुखी रहता है। कामना को छोड़ने वाला और संतोष धारण करने वाला कभी आर्थिक दृष्टि से दरिद्र नहीं हो सकता।'

कुछ क्षण रुककर उन्होंने आगे कहा, 'स्वधर्म पालन का नाम तप है। सबको सुखी देखने की इच्छा करुणा है।

क्रोध मनुष्य का बैरी है और लोभ असीम व्याधि। जो जीव मात्र के हित की कामना करता है, वह साधु है। जो निर्दयी है, वह असाधु (दुर्जन) है। स्वधर्म में डटे रहना ही स्थिरता है। मन के मैल का त्याग करना ही सच्चा स्नान है।'

युधिष्ठिर ने यक्ष के असंख्य प्रश्नों का उत्तर देकर उसे संतुष्ट कर दिया। धमराज युधिष्ठिर स्वयं सभी सद्गुण का पालन करते थे। ऐसे अनेक प्रसंग आए, जब वे धर्म के आदेश पर अटल रहे। अनेक कठिनाइयाँ सहन करने के बाद भी उन्होंने धर्म का मार्ग नहीं छोड़ा।

साभार –201 प्रेरणास्पद कहानियाँ

जीव-जन्तु और वृक्ष संरक्षण की ग्रीष्मकालीन चुनौतियाँ

जीव-जन्तु और वृक्ष हमारे पारिस्थितिक तंत्र के दो अभिन्न अंग हैं, जिनके बिना धरती पर जीवन की कल्पना असंभव है। वे न केवल वातावरण को संतुलित बनाए रखते हैं, बल्कि मानव सभ्यता के अस्तित्व के लिए भी आवश्यक हैं। परंतु, आधुनिक समय में मानवीय गतिविधियों, जलवायु परिवर्तन और पर्यावरणीय असंतुलन ने इन दोनों वर्गों के समक्ष अनेक संकट उत्पन्न कर दिए हैं। विशेष रूप से ग्रीष्मकाल में जब तापमान अत्यधिक बढ़ जाता है, जल स्रोत सूखने लगते हैं और वन क्षेत्रों में आग लगने की घटनाएं बढ़ जाती हैं, तब जीव-जन्तुओं और वृक्षों को बचाना अत्यंत कठिन हो जाता है। इस निबंध में हम ग्रीष्मकालीन चुनौतियों का विस्तृत विश्लेषण करेंगे और साथ ही उनके संरक्षण के उपायों पर भी विचार करेंगे।

1. ग्रीष्मकाल और उसका प्रभाव

क) तीव्र तापमान वृद्धि- ग्रीष्मकाल में तापमान का असामान्य रूप से बढ़ जाना सामान्य होता जा रहा है। हाल के वर्षों में 45°C से अधिक तापमान कई राज्यों में नियमित हो गया है। यह तीव्र गर्मी जीव-जन्तुओं को निर्जलीकरण, ऊष्माघात (heatstroke) और यहां तक कि मृत्यु की ओर धकेल देती है। वृक्षों की पत्तियाँ झुलसने लगती हैं और उनकी वृद्धि प्रक्रिया रुक जाती है।

ख) जल संकट- ग्रीष्मकाल जल स्रोतों के सूखने का काल भी है। नदी-नालों, पोखरों, झीलों और तालाबों का जलस्तर गिर जाता है। जीव-जन्तुओं को पानी की तलाश में गाँवों और शहरों की ओर भटकना पड़ता है, जिससे मानव-पशु संघर्ष की घटनाएं बढ़ जाती हैं। पेड़-पौधों को पर्याप्त नमी नहीं मिलती, जिससे उनका पोषण रुक जाता है।

ग) वनाग्नि- ग्रीष्मकाल में वनों में आग लगने की घटनाएं बहुत सामान्य हो गई हैं, विशेषकर शुष्क पर्णपाती वनों में। यह आग जीव-जन्तुओं और वृक्षों के जीवन के लिए विनाशकारी होती है। वन्य जीवों का प्राकृतिक आवास नष्ट हो जाता है और उन्हें पलायन के लिए मजबूर होना पड़ता है।

2. जीव-जन्तुओं की ग्रीष्मकालीन चुनौतियाँ

क) खाद्य और जल की कमी- गर्मियों में प्राकृतिक खाद्य स्रोतों का अभाव हो जाता है। घास सूख जाती है, छोटे जीवों की संख्या घट जाती है और जल स्रोतों की अनुपलब्धता से अधिकांश जंगली जानवर भूख-प्यास से व्याकुल हो जाते हैं।

ख) निवास स्थान की समस्या- बढ़ते शहरीकरण और वनों की कटाई ने जंगली जानवरों के प्राकृतिक आवासों को छीन लिया है। ग्रीष्मकाल में जब ये जीव शीतलता और पानी की तलाश में बाहर निकलते हैं, तो उन्हें शहरी क्षेत्रों में भटकना पड़ता है, जिससे मानवीय टकराव होता है।

ग) प्रजनन क्षमता पर प्रभाव- गर्मी और उसकी वजह से होने वाली समस्याओं के कारण जीवों की प्रजनन क्षमता प्रभावित होती है। अंडे सूख जाते हैं, बच्चे असमय मर जाते हैं और कई प्रजातियाँ विलुप्ति की कगार पर पहुंच जाती हैं।

3. वृक्षों की ग्रीष्मकालीन चुनौतियाँ

क) जल की कमी- गर्मियों में भूमि की नमी समाप्त हो जाती है, जिससे वृक्षों की जड़ें पानी नहीं खींच पातीं। इससे वृक्षों की वृद्धि रुक जाती है, पत्तियाँ झड़ने लगती हैं और वे असमय सूखने लगते हैं।

ख) तापमान से क्षति- गर्म हवाओं (लू) और तेज धूप से वृक्षों की कोशिकाएँ प्रभावित होती हैं, जिससे उनकी संरचना कमजोर हो जाती है। पौधों की पत्तियाँ जल जाती हैं और फूल-फल गिरने लगते हैं।

ग) वनों की कटाई और आग- ग्रीष्मकाल में लकड़ी, चारा और खेती के लिए वनों की कटाई तेज हो जाती

है। इसके अतिरिक्त वनाग्नि की घटनाएं वृक्षों को भारी मात्रा में नष्ट कर देती हैं।

4. मानव गतिविधियाँ और ग्रीष्मकालीन संकट

क) अतिक्रमण– मनुष्यों द्वारा वनों में अतिक्रमण और निर्माण कार्यों से प्राकृतिक संतुलन बिगड़ता है। यह वनों की हरियाली कम करता है, जिससे ग्रीष्मकाल की कठोरता और बढ़ जाती है।

ख) जल स्रोतों का दुरुपयोग– पानी की अत्यधिक खपत, जलाशयों का अतिक्रमण और प्रदूषण जल संकट को गंभीर बना देता है। इससे जीवों और पेड़ों को आवश्यक जल नहीं मिल पाता।

ग) शिकार और अवैध कटाई– ग्रीष्मकाल में जानवरों के कमजोर होने का फायदा उठाकर शिकारी सक्रिय हो जाते हैं। वहीं, वन माफिया भी वृक्षों की अवैध कटाई में लगे रहते हैं।

5. संरक्षण के उपाय

क) जल स्रोतों का संरक्षण– वर्षा जल संचयन को बढ़ावा देना चाहिए। तालाबों, कुओं और नदियों की सफाई और संरक्षण करना होगा। ग्रामीण क्षेत्रों में कृत्रिम जल स्रोत बनाकर जानवरों के लिए पानी की व्यवस्था की जा सकती है।

ख) वृक्षारोपण और वन संरक्षण– गर्मियों से पहले बड़े पैमाने पर वृक्षारोपण किया जाना चाहिए। वनों में आग रोकने के लिए निगरानी तंत्र और त्वरित प्रतिक्रिया दल सक्रिय रखने चाहिए। पेड़ लगाने के साथ–साथ उनके संरक्षण की जिम्मेदारी भी ली जाए।

ग) पशु–पक्षियों के लिए उपाय– पक्षियों के लिए छायादार स्थान और जल पात्र की व्यवस्था की जाए। जंगली जानवरों के लिए जंगल में सुरक्षित जलाशयों और शीतल छायाएं विकसित की जाएं। रेस्क्यू टीमें ग्रीष्मकाल में विशेष सतर्कता से काम करें।

घ) जन–जागरूकता– लोगों को ग्रीष्मकालीन पर्यावरणीय संकटों के प्रति शिक्षित किया जाए। स्कूलों, कॉलेजों और पंचायतों में वृक्ष संरक्षण और जीव–जंतुओं के संरक्षण पर अभियान चलाए जाएं। 'एक व्यक्ति एक पेड़' जैसी योजनाओं को प्रोत्साहित किया जाए।

6. शासन और नीति संबंधी सुझाव

वन्य जीवों और वृक्षों की सुरक्षा हेतु विशेष ग्रीष्मकालीन योजनाएं बनाई जाएं। वन विभाग की ग्रीष्मकालीन पेट्रोलिंग को और सशक्त किया जाए। पर्यावरणीय अपराधों पर कठोर दंड और निगरानी सुनिश्चित हो। जल, जंगल और जानवरों की रक्षा हेतु एकीकृत नीति तैयार की जाए, जिसमें ग्रीष्मकाल को विशेष महत्व दिया जाए।

7. समाज की भूमिका

स्थानीय समुदाय अपने आस–पास के जंगलों और जीवों की रक्षा के लिए आगे आएं। स्वयंसेवी संगठन पेयजल, वृक्षारोपण और जागरूकता के लिए गर्मियों में विशेष अभियान चलाएं। सोशल मीडिया और तकनीक के माध्यम से संरक्षण की भावना को युवा पीढ़ी में प्रसारित किया जाए।

निष्कर्ष:

जीव–जन्तु और वृक्ष हमारे पर्यावरण के आधार स्तंभ हैं। ग्रीष्मकाल उनके लिए एक चुनौतीपूर्ण समय होता है, जब उन्हें जल, छाया और सुरक्षित स्थान की अत्यधिक आवश्यकता होती है। यदि हम अभी भी सजग नहीं हुए, तो आने वाले समय में हमें न केवल जैव विविधता की हानि का सामना करना पड़ेगा, बल्कि मानव जीवन भी संकट में पड़ जाएगा। अतः यह हम सबकी सामूहिक जिम्मेदारी है कि हम जीव –जन्तुओं और वृक्षों के संरक्षण हेतु ठोस कदम उठाएं और ग्रीष्मकाल को उनके लिए सहनीय बनाएं। तभी एक संतुलित, सुरक्षित और हरित भविष्य की कल्पना संभव हो सकेगी।

–दिलसुख राम
गाँव व डा. शेखुपुर दड़ौली,
जिला–फतेहाबाद, हरियाणा
मो.: 9812122588

बिश्नोई संस्कारों के लोकगीतों में संस्कृति चित्रण

मानव एवं संस्कृति का अटूट सम्बन्ध है। मानव में चिन्तन शक्ति का उदय हुआ, तभी उसने अपने सुख एवं विकास के लिए कुछ सामाजिक एवं व्यवहार सम्बन्धी नियम बनाये। इन्हीं नियमों से संस्कृति का निर्माण हुआ और संस्कृति के माध्यम से मनुष्य संस्कारवान बना है। संस्कृति ने ही मनुष्य को सामाजिक प्राणी बनाया है। मानव में मानवीय गुणों के विकास में संस्कृति का बहुत योगदान है। संस्कृति का निर्माता भी मानव है और मानव को मानव भी संस्कृति ने बनाया है। वस्तुतः संस्कृति का निर्माण किसी निश्चित अवधि में नहीं हुआ है। अपितु इसकी रचना एवं विकास में अनेक सदियों के अनुभवों का हाथ है।[1] किसी देश में जब कुछ विशिष्ट गुण स्थायीत्व प्राप्त कर लेते हैं और उनसे उस देश की पहचान बन जाती है तो उसे संस्कृति कहते हैं। वस्तुतः विचार और कर्म के क्षेत्र में जो राष्ट्र का सृजन है वही उसकी संस्कृति है।[2] अपने विशिष्ट गुणों के कारण प्रत्येक जाति, समाज एवं देश की कुछ विशिष्ट विशेषताएं बन जाती हैं, जिससे उसकी संस्कृति बनती है। इन्हीं सांस्कृतिक विशेषताओं के कारण उस देश की पहचान बनती है और सांस्कृतिक विशेषताएं ही उसके विकास में सहायक होती है।

भारत विभिन्न धर्मों एवं जातियों का देश है। यहां की प्रत्येक जाति एवं धर्म में भारतीय संस्कृति समाहित है, पर प्रत्येक जाति एवं धर्म की कुछ अपनी विशेषताएं भी हैं, जिससे उसकी अलग पहचान भी बनी हुई है।

भारत गांवों का देश है। बिश्नोई पंथ का आधार भी ग्रामीण हैं। इस पंथ के अधिकांश लोगों का निवास गांव रहे हैं। खेती एवं पशुपालन इस पंथ के मुख्य व्यवसाय रहे हैं। ग्रामीण पृष्ठभूमि के कारण बिश्नोई पंथ के लोकगीत अपने कलेवर में ग्रामीण परिवेश को समाहित किये हुए हैं। इसलिए इस समाज का प्रत्येक लोकगीत ग्रामीण परिवेश की विशेषताओं से युक्त है और साथ ही में इन गीतों में भारतीय संस्कृति भी रमी हुई है। बिश्नोई समाज हिन्दू धर्म का अभिन्न अंग होते हुए भी अपना अलग वैशिष्ट्य रखता है। इसी आधार पर वह भारतीय संस्कृति की समस्त विशेषताओं को अपने में आत्मसात करके भी अपनी अलग सांस्कृतिक विशेषताएं रखता है, जिसके आधार पर यह समाज न केवल अपने देश में अपितु सम्पूर्ण विश्व में अपनी अलग पहचान बनाये हुए है। अपनी विशिष्ट विशेषताओं के कारण यह विश्व आकाश में चांद की तरह अलग से चमकता हुआ दिखाई देता है।

किसी भी देश, समाज या जाति की संस्कृति से हम उस देश या समाज की स्थिति को जान सकते हैं। संस्कृति की जानकारी का एक प्रमुख आधार जाति विशेष का लोक साहित्य है। लोक साहित्य में भी सर्वाधिक महत्व लोकगीतों का है। लोकगीत संस्कृति के सच्चे दर्पण हैं। संस्कृति की सूक्ष्म से सूक्ष्म विशेषता लोकगीतों में देखी जा सकती है। जीवन के सच्चे प्रतिबिम्ब होने के कारण लोकगीतों में संस्कृति का चित्रण होना स्वाभाविक है। इसी आधार पर बिश्नोई लोकगीतों में बिश्नोई संस्कृति के साथ-साथ भारतीय संस्कृति का चित्रण हुआ है। बिश्नोई संस्कृति के उदार दृष्टिकोण के कारण उसके लोकगीतों में भारतीय संस्कृति की अनेक विशेषताएं चित्रित हुई हैं। बिश्नोई पंथ के संस्थापक गुरु जाम्भोजी का जो मानवीय दृष्टिकोण रहा, उसका प्रभाव बिश्नोई समाज एवं इस समाज के लोकगीतकारों पर भी रहा है। गुरु जाम्भोजी प्राणी मात्र के हित के लिए मानव समाज को बहुत ऊंचा उठाना चाहते थे। इसलिए डॉ. माहेश्वरी ने गुरु जाम्भोजी द्वारा सबदवाणी में दिये गये सन्देश के सम्बन्ध में लिखा है- 'मनुष्य को पशु सामान्य धरातल से उठाकर सही अर्थों में मनुष्य बनाना सबदवाणी का मुख्य संदेश है जो आधुनिक परिवेश में भी पूर्णतः सही और लोक कल्याणकारी है।'[3]

मानव समाज के साथ-साथ गुरु जाम्भोजी प्राणी मात्र के भी हितैषी रहे हैं। उनकी इसी विचारधारा का प्रभाव उनके अनुयायियों पर पड़ा है, जिससे उनके अनुयायी प्रकृति के सच्चे रक्षक बन गये और वे वन्य

जीवों एवं वृक्षों की रक्षा हेतु प्राण न्योछावर करते आ रहे हैं। समाज का यही उदार दृष्टिकोण एवं प्रकृति प्रेम उनके लोकगीतों में अभिव्यक्त हुआ है।

हिन्दू समाज में कुल सोलह संस्कार मान्य हैं,[4] पर बिश्नोई समाज की आडम्बरहीनता एवं सादगी की विशेषता के कारण इसमें चार ही संस्कार हैं- जन्म, सुगरा, विवाह एवं मृत्यु। इन चार संस्कारों में गीत केवल जन्म, विवाह एवं मृत्यु के संस्कार पर ही गाये जाते हैं। सुगरा संस्कार से सम्बन्धित कोई गीत नहीं है। शेष तीनों संस्कार न केवल बिश्नोई समाज के लिए अपितु मानव समाज के लिए भी बहुत महत्वपूर्ण है। इन संस्कारों से सम्बन्धित गीतों में बिश्नोई संस्कृति की विभिन्न विशेषताओं को देखा जा सकता है। बिश्नोई संस्कृति की विभिन्न विशेषताओं को संजोये रखने के कारण ही बिश्नोई लोकगीतों का अपना अलग महत्व है और अपनी अलग पहचान है।

जन्म-संस्कार के लोकगीतों में संस्कृति चित्रण:

बिश्नोई समाज में जन्म से सम्बन्धित गीत पुत्र जन्म पर ही गाये जाते हैं। समाज में पीहर में प्रसव कराने की परम्परा रही है और पुत्र जन्म के उत्सव ससुराल में ही होते हैं। प्रसव के तीन-चार माह बाद जब बहू पुत्र को लेकर ससुराल आती है, तो पुत्र जन्म की प्रसन्नता में गीत गाये जाते हैं, जिसमें बच्चे की बुआ की विशेष भूमिका रहती है। भाई के पुत्र होने की प्रसन्नता में बहन पीहर आकर रात्रि गीत गवाती हैं, जिन्हें 'धीनड़िया' कहते हैं। इस अवसर पर बहन गुड़ या पताशे भी बंटवाती है। रविवार की संध्या को 'जळवा पूजन' का उत्सव भी होता है, जिसमें तालाब या नदी पर जाते-आते समय जन्म से सम्बन्धित गीत गाये जाते हैं।

बिश्नोई समाज के जन्म से सम्बन्धित लोकगीतों में 'पीळो' नामक गीत बहुत ही प्रसिद्ध एवं लोकप्रिय है। यह गीत कई रूपों में प्रचलित है, जिससे इसकी लोकप्रियता स्वत: ही प्रमाणित हो जाती है। इस एक गीत में ही भारतीय संस्कृति की अनेक विशेषताएं चित्रित हुई है। इस गीत के प्रारम्भ में कृषि संस्कृति का चित्रण हुआ है। कृषि संस्कृति भारतीय संस्कृति का अभिन्न अंग है। कृषि जो न केवल बिश्नोई समाज का भारत वर्ष का मुख्य व्यवसाय है। इसलिए इस गीत के प्रारम्भ में कृषि के लिए जमीन की आवश्यकता पर बल दिया है और गांव धणी से दो बीघा जमीन की मांग की गई है।

गांव धणी आगे साहेबा अरज करोनी,
दो बीघा धरती देरावो गाडा मारूगी।[5]

कृषि सम्बन्धी विभिन्न वस्तुओं एवं कार्यों का वर्णन करके गीत में कृषि संस्कृति को उजागर किया गया है।

एकता भारतीय संस्कृति की एक अन्य प्रमुख विशेषता है। हमारे देश में भौगोलिक दृष्टि से भी अनेक असमानताएं हैं। कहीं ऊंचे पहाड़ है तो कहीं समतल मैदान तो कहीं मीलों तक रेत के टीले हैं। इसके साथ-साथ हमारी 'मातृभूमि पर अनेक जनपद बसे हुए हैं, परन्तु उनकी अनेकता में एकता का वरदान भी अदृष्ट नहीं होता।'[6] धर्म, भाषा एवं पहनावे की दृष्टि से भी देश में मिलता है। इतनी भिन्नता के बाद भी देश एकता के सूत्र में बंधा हुआ है और समय-समय पर यहां के लोग आपसी एकता का परिचय देकर देश की रक्षा करते आ रहे हैं और उसे विकास के पथ पर अग्रसर कर रहे हैं। भारतीय संस्कृति की एकता की यही भावना इस 'पीळो' नामक गीत में अभिव्यक्त हुई है। बिश्नोई समाज में उनतीस नियमों में 'तीस दिनों के सूतक' का नियम है, जिसके अंतर्गत प्रसव के तीस दिनों तक जच्चा-बच्चा घर में अलग कक्ष में रहते हैं। इसके बाद गायनाचार्य द्वारा हवन करके पाहळ बनाया जाता है, जिसे जच्चा-बच्चा दोनों को दिया जाता है। इसे 'चळू लेना' कहते हैं। समाज में पुत्र जन्म पर तीस दिनों के सूतक के बाद चळू लेते समय तथा 'जळवा पूजन' पर पीळो ओढ़ा जाता है, जिससे जच्चा एवं उसके परिवार की प्रसन्नता की कोई सीमा नहीं रहती। प्रसन्नता की इस घड़ी में पूरा समाज आनंदित होकर सामाजिक एकता का परिचय देता है। इसलिए गीत में कहा गया है-

पीळो तो ओढ जच्चा चळू तो लीनो,
जोसीड़ै पीळो सहरायो गाडा मास जी,
पीळो रंगायद्यो।
पीळो तो ओढ जच्चा पाणी नै चाली।

सगले सहर सहरायो गाडा मारू जी,

पीळो रंगायद्‌यो।[7]

एकता की इसी भावना से प्रेरित होकर ही घर के सभी सदस्य बिना किसी भेदभाव के सभी को पुत्र जन्म पर बधाई देते हैं।

कोरा-कोरा नोट ढाढया नै बांटा, म्हे धीनड़गी बधाई द्‌या।[8]

आज के इस सम्प्रदायिकता के वातावरण में हमें बिश्नोई लोकगीतों में निहित एकता की भावना का प्रचार-प्रसार करना चाहिए।

'तीस दिन सूतक' के नियम का पालन करने से जच्चा-बच्चा दोनों ही स्वस्थ रहते हैं। तीस दिनों तक जच्चा-गृह में निवास करने से जच्चा-बच्चा दोनों ही बाहरी प्रदूषण एवं बीमारी के आक्रमण से सुरक्षित रहते हैं। इस अवधि में जच्चा को पौष्टिक आहार मिलता है, जिससे बच्चे को पर्याप्त दूध प्राप्त होता रहता है। पौष्टिक आहार में जच्चा को गोंद, अजवायण, सूंठ एवं घी आदि मिलता है, जिसका वर्णन जन्म के गीतों में हुआ है। यद्यपि एक गीत में जच्चा अपने मारूजी को सूतक के समय घर पर रहकर जच्चा के लिए अजवायण लाने और उसके लड्‌डू बनाने के लिए कहती है, जिस पर मारूजी उसे यही विश्वास दिलाते हैं कि उसे कोई चिन्ता करने की आवश्यकता नहीं है। यह कार्य घर के अन्य लोग कर देंगे। इस गीत के माध्यम से हमें यह जानना चाहिए कि स्वस्थ मां एवं वीर पुत्र के द्वारा ही देश शक्तिशाली हो सकता है। आज के इस नारी सशक्तिकरण के युग में हमें भारतीय संस्कृति में निहित 'यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता' की विशेषता का प्रचार-प्रसार करके नारी जाति को और अधिक शक्तिशाली बनाना है।

एक समय ऐसा था जब भारतीय संस्कृति में संयुक्त परिवार प्रथा का बहुत महत्व था। यह प्रथा कृषि के लिए बहुत उपयुक्त थी, जिससे घर के सदस्यों में आपसी प्रेमभाव रहता था, पर शिक्षा, नौकरी एवं पाश्चात्य प्रभाव के कारण संयुक्त परिवार प्रथा में टूटन आ गई और उसके स्थान पर एकल परिवार स्थापित हो गये। एकल परिवार से पारिवारिक प्रेम एवं आपसी सहयोग समाप्त हो गया। एकल परिवार प्रथा दाम्पत्य जीवन को भी सुदृढ़ नहीं रख सकी जिससे एकल परिवार में रहने वाले पति-पत्नी आपस में झगड़ा करने लग गये और उनमें तालाब की प्रवृत्ति बढ़नी प्रारम्भ हो गई। इसी कारण बिश्नोई पंथ के जन्म के गीतों में एकल परिवार प्रथा को नकारा गया है और संयुक्त परिवार प्रथा के महत्व के माध्यम से हमारी संस्कृति में लुप्त होते हुए आपसी प्रेम को स्थापित करने का प्रयास किया गया है। बिश्नोई समाज कृषि प्रधान समाज रहा है। इसलिए वह संयुक्त परिवार प्रथा एवं उसमें पनपने वाले प्रेम एवं सहयोग से परिचित रहा है। इसलिए समाज के लोकगीतों में आपसी प्रेम एवं संयुक्त परिवार का समर्थन किया गया है। इसी कारण एक गीत में घर के अन्य सदस्यों की भावना को नकारने वाली पत्नी को पति महत्व नहीं देता है।

तेरो आंगण पटकूं माटको, तेरो बाखळ पटकूं माटको।
मेरै बाबै जी गो मान घटायो, मेरै, बीरै जी गो मान घटायो।

लाड्‌ड़ा चरचरी सूंठ गा।[9]

इस तरह बिश्नोई समाज के जन्म के गीतों में भारतीय संस्कृति एवं बिश्नोई संस्कृति की विभिन्न विशेषताओं को देखा जा सकता है।

संदर्भः

1. रामधारी सिंह दिनकर, संस्कृति, भाषा और राष्ट्र, पृ. 13
2. डॉ. कालूराम शर्मा व डॉ. प्रकाश व्यास, भारतीय संस्कृति के मूल आधार, पृ. 2
3. डॉ. हीरालाल माहेश्वरी, जाम्भोजी की सबदवाणी (मुखबंध), पृ. 41
4. डॉ. स्वर्णलता अग्रवाल, राजस्थानी लोकगीत, पृ. 52
5. डॉ. बनवारी लाल सहू, बिश्नोई लोकगीत, पृ. 23
6. देवेन्द्र सत्यार्थी, धीरे बहो गंगा, पृ. 37
7. डॉ. बनवारी लाल सहू, बिश्नोई लोकगीत, पृ. 24
8. वही, पृ. 29
9. लेखक का निजी संग्रह, जन्म के गीत, गीत सं. 22

-डॉ. बनवारी लाल सहू

विभागाध्यक्ष (हिन्दी) से.नि.

एन.एम.पी.जी. कॉलेज, हनुमानगढ़ टाउन (राज.)

मो.: 9414875029

lLdkj

वर्तमान समय में समाज में बच्चों में सबसे ज्यादा उदंडता एवं अनुशासनहीनता देखने को मिल रही है। इसका कारण हर कोई बतलाता है कि बच्चों को संस्कारवान बनाना चाहिए, परंतु हम सोचते हैं कि बच्चों को संस्कार कब से व कौन बनाने का उत्तरदायित्व वहन करें, मैंने इस पर विचार किया। सन् 2011 में भी मैंने एक निबंध लिखा था, जो अमर ज्योति में छपा भी था। परंतु काफी समय गुजर जाने के बाद मैं सोचता हूं कि इसका नवीनीकरण होना चाहिए ताकि समाज में बच्चों को संस्कारवान बनाया जा सके। मेरे विचार से ही नहीं हमारे शास्त्र भी यह बतलाते हैं कि बच्चों को संस्कार एवं शिक्षा अपने मां के उदर से ही प्रारंभ हो जाती है। हमारे शास्त्रों के अनुसार सतयुग में भक्त प्रह्लाद ने अपनी मां के उदर में ही विष्णु भगवान की भक्ति का पाठ पढ़ा, क्योंकि भक्त प्रह्लाद की मां कयादू श्री विष्णु भगवान की बचपन से ही भक्त थी। परंतु कयादू की शादी हिरण्यकश्यपु के साथ हो जाने के कारण उसे भगवान विष्णु की आराधना को बंद करना पड़ा। हिरण्यकश्यपु विष्णु का बहुत ही बड़ा शत्रु था एवं विष्णु का नाम लेना भी पसंद नहीं करता था। परंतु ईश्वर की अनुकंपा से जब भक्त प्रह्लाद मां के गर्भ में आया तो उस समय हिरण्यकश्यपु भगवान शिव की आराधना करने के लिए चले गए और नारद जी ने आकर के कयादू को अलग ही महल में रहने की सलाह दी। उनके अनुसार माता कयादू अच्छे से धार्मिक ग्रंथ पढ़ने लगी। इस कारण से कयादू के पेट से नारायण-नारायण की आवाज आती रहती थी। इसी प्रकार दूसरा उदाहरण द्वापर युग का मिलता है। जब वीर अभिमन्यु ने अपनी मां के उदर में ही चक्रव्यूह भेदन की शिक्षा ग्रहण कर ली थी और युद्ध में उसे काम में भी लिया। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि भक्त प्रह्लाद एवं अभिमन्यु ही नहीं हर बच्चा मां के पेट में ही बहुत से संस्कार एवं शिक्षा ग्रहण करता रहता है, परंतु हम कोई इस ओर ध्यान ही नहीं देते हैं। इसलिए हमें क्या करना चाहिए, इस पर विचार करना है। मेरे विचार से जो औरत मां बनने वाली है, उसे अपने बच्चों को अच्छा संस्कारवान बनाने के लिए स्वयं को 9 माह तक इस प्रकार रहना चाहिए कि वह न तो कभी किसी से झगड़ा करे और न ही किसी पर गुस्सा करे एवं पति-पत्नी को तो 9 माह तक बड़े ही प्यार से रहना चाहिए, जिसकी छाप बच्चे पर पड़ती है। अगर कोई घर में उस पर गुस्सा कर भी ले तो उसे हंसकर टाल देना चाहिए ताकि सामने वाले का गुस्सा शांत हो जावे एवं बच्चों पर उसका अनुचित प्रभाव न पड़े। गर्भावस्था में न तो काम करने से कोई अंतर पड़ता है एवं न ही कोई भोजन का विशेष असर पड़ता है। भोजन चाहे साधारण हो परंतु सात्विक भोजन ही करना चाहिए। ज्यादा तीखा या तला हुआ भोजन नहीं करना चाहिए। घरेलू काम करने से कोई विशेष अंतर नहीं पड़ता है। काम करने से तो बच्चा भी स्वस्थ एवं बलवान ही उत्पन्न होगा। अगर औरत पढ़ी-लिखी हो तो उसे गुरु जंभेश्वर भगवान की सबदवाणी, रामायण या भगवान की कथा पढ़ते रहना चाहिए, जिससे बच्चे पर अच्छा असर पड़ता है। अगर अशिक्षित हो तो उसे बुजुर्ग मां-बाप से या घर में पढ़े-लिखे सदस्यों से धार्मिक पुस्तक सुननी चाहिए या धार्मिक एवं ज्ञानवान कहानी सुननी चाहिए जिसका बच्चे पर अच्छा असर पड़ता है। एक बार मैंने जोधपुर में इस पर चर्चा की तो एक औरत ने बतलाया कि यह बात सत्य है क्योंकि उसके दो पुत्र हैं। उसने बताया कि जब पहला पुत्र गर्भावस्था में था उस समय मैं कोई जोत नहीं करती थी और ना ही कोई धार्मिक ग्रंथ पढ़ती या सुनती थी। मेरा पुत्र इस आचार-विचार का है, परंतु दूसरे पुत्र की गर्भावस्था में मैं ज्योत करती थी और सबदवाणी पढ़ती थी तो मेरा दूसरा बच्चा बचपन से ही धार्मिक प्रवृत्ति का है एवं अब मैं सुबह ज्योत करती हूं तो वह भी स्नान करके जोत पर आकर बैठ जाता है। गर्भावस्था में मां-बाप या अन्य घर के सदस्यों को भी कोई असत्य नहीं बोलना चाहिए ताकि आपका बच्चा भी सत्यवादी ही होगा एवं बच्चों की माता को ज्यादा से ज्यादा अच्छे-अच्छे नियमों का पालन करना चाहिए। इन्हीं कर्म से बच्चा अच्छा संस्कारवान एवं स्वस्थ ही पैदा होगा तथा समाज में अपने मां-बाप को सुखी रखते हुए पूरे समाज में भी अपना नाम रोशन करेगा। स्वयं एवं समाज की उन्नति में सहयोग करेगा। अंत में, मैं इस निबंध के माध्यम से मेरी बहनों या पुत्रियों को यह बतलाना चाहता हूं कि अपने बच्चों को संस्कारवान बनाना है तो उन्हें गर्भावस्था से ही अच्छे संस्कार देने की कोशिश करें।

-श्रीकृष्ण बिश्नोई
सेवानिवृत्त प्रधानाध्यापक
गांव मुकलावा, श्रीगंगानगर (राज.)
मो.: 9784948856

ग्रीष्म ऋतु में बिश्नोई जीवन शैली अनुकूल करणीय कार्य

भारत का राजस्थान राज्य जहाँ भीषण गर्मी और मरुस्थलीय परिस्थितियाँ सामान्य हैं, वहाँ एक समुदाय ऐसा भी है जो न केवल इन विपरीत परिस्थितियों में जीवन जीने की कला जानता है, बल्कि सम्पूर्ण प्रकृति के साथ तालमेल बिठाकर पर्यावरण रक्षक की भूमिका भी निभाता है। यह समुदाय है– बिश्नोई समुदाय।

बिश्नोई धर्म की स्थापना गुरु जाम्भोजी ने 15वीं शताब्दी में राजस्थान में की थी। उन्होंने 29 नियमों के पालन का आदेश दिया। इसीलिए इस धर्म को 'बिश्नोई' कहा गया।

इन नियमों में प्रमुख हैं–

- वृक्षों को न काटना
- पशु–पक्षियों की रक्षा करना
- हिंसा से दूर रहना
- जल एवं भूमि की पवित्रता बनाए रखना

बिश्नोई लोग पशु–पक्षियों, वृक्षों, जल और पर्यावरण को ईश्वर रूप मानते हैं।

ऐतिहासिक बलिदानः *खेजड़ली आंदोलन*

1730 में जोधपुर के महाराजा के आदेश पर सैनिक खेजड़ी वृक्षों की कटाई करने पहुँचे। बिश्नोई महिला अमृता देवी और उनके साथ 363 लोगों ने वृक्षों की रक्षा के लिए प्राणों की आहुति दी।

'सिर सांठे रूंख रहे तो भी सस्तो जाण।'

–अमृता देवी बिश्नोई

(यदि सिर कट जाए पर वृक्ष बच जाए, तो यह सौदा सस्ता है।)

यह बलिदान आज भी पर्यावरण आंदोलन की प्रेरणा है। बिश्नोई जीवनशैली अपने आप में ग्रीष्म ऋतु के अनुकूलता का एक आदर्श उदाहरण है, जो प्रकृति, जीव–जंतु और पर्यावरण के संरक्षण को धार्मिक आचरण से जोड़ती है।

बिश्नोई जीवनशैली की विशेषताएँ

बिश्नोई समाज की जीवनशैली 'प्रकृति के अनुरूप जीवन' को मूल मान्यता देती है। इसके कुछ प्रमुख लक्षण हैं–

- पर्यावरण और जीवों के प्रति संवेदनशीलता
- वृक्षों की पूजा और रक्षा का भाव
- जल की प्रत्येक बूंद का सदुपयोग करना
- हिंसा से दूर रहना
- जैविक जीवनशैली अपनाना

बिश्नोई समुदाय द्वारा चलाए गए पर्यावरण संरक्षण कार्य।

वन्य जीवों की सेवाः

- घायल जानवरों को बचाकर उनका उपचार करना
- उनके लिए चारा और पानी की व्यवस्था करना
- शिकारी गतिविधियों की सूचना वन विभाग को देना

समाज के लोगों की जीवन शैली में शामिल है–

पक्षियों की सुरक्षाः

- गर्मियों में घरों के बाहर जल और दानापात्र रखना
- घायल पक्षियों का इलाज

वृक्षारोपण एवं संरक्षणः

- प्रत्येक त्यौहार, विवाह जैसे अवसरों पर वृक्षारोपण करना
- शुष्क मरुस्थल में जल–संरक्षण के उपाय अपनाना

ग्रीष्म ऋतु में उत्पन्न चुनौतियाँ

- ग्रीष्म ऋतु में पर्यावरणीय संकट गम्भीर हो जाता है
- ग्रीष्म ऋतु की तपिश केवल मनुष्य को ही नहीं, बल्कि सम्पूर्ण जैव विविधता को प्रभावित करती है।

ग्रीष्मकाल के प्रमुख पर्यावरणीय संकटः

- वनाग्नि की संभावनाः अत्यधिक गर्मी में जंगलों में आग लगने की घटनाएँ बढ़ जाती हैं।
- जल स्रोतों का सूखनाः नदी, तालाब और कुएँ सूख जाते हैं।
- वन्य जीव संकट मेंः पानी और छाया की कमी से जानवरों की मृत्यु दर बढ़ती है।
- पक्षियों की मृत्युः उड़ते पक्षी धूप और प्यास से गिरने लगते हैं।

ग्रीष्म ऋतु विशेष रूप से राजस्थान में कठोर और शुष्क होती है। इसमें मुख्य समस्याएँ हैं–

- अत्यधिक तापमान (45–50°C)
- जल स्रोतों का सूखना
- पशु–पक्षियों के लिए भोजन–पानी की कमी
- वन्य जीवों के जीवन पर संकट

• वृक्षों का सूखना और वनाग्नि की आशंका

बिश्नोई समुदाय द्वारा अपनाए जाने योग्य/अनुकूल करणीय कार्य

क) पशु-पक्षियों की सेवा

वे जीव रक्षा हेतु ये कार्य कर सकते हैं-

• गर्मी में पक्षियों के लिए जल पात्र (मिट्टी के बर्तन) रखना

• घायल पक्षियों का इलाज करवाना/करना

• जानवरों के लिए जलाशयों का निर्माण करना

• भोजन/चारे का प्रबंध करना

ख) वृक्ष संरक्षण एवं हरियाली

• वृक्षों को बचाने के लिए आन्दोलन की परंपरा को अक्षुण रखना (जैसे खेजड़ली आंदोलन)

• सूखे मौसम में भी वृक्षों की सिंचाई की व्यवस्था करना

बंजर भूमि पर वृक्षारोपण करना

पारिवारिक आयोजनों पर पौधारोपण की परंपरा को कायम रखना और बढ़ावा देना

ग) जल संरक्षण

• वर्षा जल संचयन के परंपरागत तरीके अपनाना (टांका, जोहड़, बावड़ी)

• जल का सीमित और सोच-समझकर उपयोग करना

• सामूहिक कुंओं की सफाई और संरक्षण कार्य करना

घ) शिकार विरोध

• शिकारियों का विरोध करना और वन्यजीवों की रक्षा करना

• वन विभाग के साथ सहयोग करना

• स्थानीय स्तर पर 'वन प्रहरी' की भूमिका निभाना

बिश्नोई धर्म की शिक्षाएँ और ग्रीष्म ऋतु

गुरु जाम्भो जी द्वारा बताए गए 29 नियमों में से कई सीधे तौर पर ग्रीष्म ऋतु के अनुकूल हैं-

• 'जीव हिंसा ना करणी' गर्मी में भी जीवों की रक्षा

• 'रूंख ना घावै' वृक्षों को नष्ट न करना

• 'पानी छाणी पीवो' जल शुद्धि एवं संरक्षण

इन शिक्षाओं के कारण बिश्नोई जीवनशैली स्वाभाविक रूप से ग्रीष्म ऋतु में पर्यावरण के लिए सकारात्मक बन जाती है।

बिश्नोई जीवनशैली से आधुनिक समाज को क्या सीखना चाहिए ?

क्षेत्र	**बिश्नोई शैली**	**आधुनिक अनुकूलन**
जल संरक्षण	टांका, जोहड़, सहेजना	रेन वॉटर हार्वेस्टिंग
वृक्ष रक्षा	धार्मिक भावना से संरक्षण	कानूनी और सामाजिक निगरानी
पशु सेवा	रोजाना चारा-पानी देना	NGO द्वारा पशु सहायता केंद्र
पर्यावरण	जीवन का मूल तत्व	CSR और नीति नियोजन

निष्कर्ष: बिश्नोई जीवनशैली न केवल ग्रीष्म ऋतु की कठिनाइयों से जूझने का समाधान प्रस्तुत करती है, बल्कि यह एक ऐसी प्रेरणादायक परंपरा है, जिसमें प्रकृति और धर्म एकरूप हो जाते हैं। जल, जंगल और जीवन के समन्वय का जो दर्शन बिश्नोई समाज में है, वह संपूर्ण विश्व के लिए अनुकरणीय है।

आज जब पृथ्वी जलवायु संकट से गुजर रही है, तब बिश्नोई समाज की ग्रीष्म ऋतु में अपनाई गई जीवनशैली हमें बताती है कि- 'हम प्रकृति के स्वामी नहीं, बल्कि संरक्षक हैं।'

संदर्भ:

1. डॉ. रेखा मेहता (2020), बिश्नोई धर्म और पर्यावरण संरक्षण, राजस्थान संस्कृत अकादमी।
2. DownTo Earth Hindi 'गर्मी में कैसे जिंदा रहते हैं रेगिस्तान के जीव'
3. अमृता देवी पर्यावरण संस्थान की रिपोर्ट (2021)
4. National Geographic (2022). Guardians of the Desert – Bishnoi Culture
5. Ministry of Jal Shakti, भारत सरकार पारंपरिक जल संरक्षण पद्धतियाँ
6. यूनेस्को (UNESCO): Bishnoi– A Living Ecospiritual Tradition.

-डॉ. राजा राम
गाँव व डा. शेखुपुर दडोली,
जिला फतेहाबाद, हरियाणा
मो.: 9896789100

बिश्नोई समाज में हवन कुंड और नारियल जलाने की परंपराः पर्यावरण संरक्षण के संदर्भ में एक विश्लेषण

बिश्नोई समाज, जिसकी स्थापना गुरु जंभेश्वर जी (जाम्भोजी) ने 1485 में की थी, पर्यावरण संरक्षण और जीव रक्षा के लिए विश्व भर में प्रसिद्ध है। गुरु जंभेश्वर जी के 29 नियमों में प्रकृति के प्रति प्रेम, शुद्धता और संतुलन की शिक्षा दी गई है। इन नियमों का पालन करते हुए बिश्नोई समाज आज भी पर्यावरण के प्रति अपनी जिम्मेदारी को गंभीरता से निभाता है। हालांकि, अमावस्या के अवसर पर बिश्नोई समाज में बड़े-बड़े हवन कुंड बनाकर उनमें नारियल जलाने की परंपरा भी प्रचलित है, जिसके दौरान काला धुआं उत्पन्न होता है। यह परंपरा पर्यावरण संरक्षण के संदेश के साथ कितनी सार्थक है और क्या यह वास्तव में पर्यावरण की शुद्धि में योगदान देती है, इस पर विचार करना आवश्यक है। साथ ही, मुक्ति धाम मुकाम में अमावस्या पर होने वाले हवन के फायदों और इसे सही तरीके से करने की विधि पर भी चर्चा करना प्रासंगिक होगा।हवन कुंड और नारियल जलाने की परंपरा हवन, जिसे यज्ञ या होम भी कहा जाता है, एक प्राचीन वैदिक अनुष्ठान है जिसमें अग्नि के माध्यम से देवताओं का आह्वान किया जाता है। बिश्नोई समाज में अमावस्या पर बड़े हवन कुंड बनाकर उसमें नारियल जलाने की प्रथा धार्मिक और सामाजिक एकता का प्रतीक है। नारियल को शुभता, समृद्धि और आत्मिक शुद्धता का प्रतीक माना जाता है। इसे जलाने से यह विश्वास जुड़ा है कि यह नकारात्मक ऊर्जा को दूर करता है और वातावरण में सकारात्मकता लाता है। लेकिन इस प्रक्रिया में बड़ी मात्रा में नारियल जलाने से उत्पन्न होने वाला काला धुआं पर्यावरण पर प्रतिकूल प्रभाव डाल सकता है। यह धुआं कार्बन उत्सर्जन का स्रोत बनता है, जो वायु प्रदूषण को बढ़ाता है और गुरु जंभेश्वर जी के पर्यावरण संरक्षण के सिद्धांतों से कुछ हद तक विरोधाभासी प्रतीत होता है। क्या नारियल जलाने से पर्यावरण की शुद्धि होती है? वैदिक परंपरा में हवन को वातावरण शुद्ध करने का एक प्रभावी माध्यम माना जाता है। कुछ वैज्ञानिक अध्ययनों के अनुसार, हवन में प्रयुक्त औषधीय जड़ी-बूटियों और विशिष्ट सामग्रियों को जलाने से उत्पन्न धुआं हवा में मौजूद हानिकारक जीवाणुओं को कम कर सकता है। हालांकि, जब बात केवल नारियल जलाने की होती है, तो स्थिति भिन्न हो सकती है। सूखे नारियल के गोले जलाने से मुख्य रूप से कार्बन-डाइ -ऑक्साइड, कार्बन मोनोऑक्साइड और कणिकीय पदार्थ (PM) उत्पन्न होते हैं, जो वायु प्रदूषण का कारण बनते हैं। यदि बड़ी मात्रा में नारियल जलाया जाए, जैसा कि अमावस्या के हवन में होता है, तो यह पर्यावरण पर नकारात्मक प्रभाव डाल सकता है। इसके विपरीत, यदि हवन में औषधीय जड़ी-बूटियों, शुद्ध घी और पवित्र लकड़ियों का संतुलित उपयोग किया जाए, तो यह वातावरण को शुद्ध करने में अधिक प्रभावी हो सकता है। इसलिए, यह कहना उचित होगा कि नारियल जलाना अपने आप में पर्यावरण शुद्धि का पूर्ण साधन नहीं है, बल्कि इसके साथ अन्य सामग्रियों का समुचित उपयोग इसकी सार्थकता को बढ़ा सकता है।

निष्कर्षः

बिश्नोई समाज में अमावस्या पर हवन की परंपरा आध्यात्मिक और सांस्कृतिक रूप से महत्वपूर्ण है, लेकिन पर्यावरण संरक्षण के प्रति गुरु जंभेश्वर जी के उपदेशों को ध्यान में रखते हुए इसे संशोधित करने की आवश्यकता है। बड़ी मात्रा में नारियल जलाने के बजाय, संतुलित और पर्यावरण-अनुकूल सामग्रियों का उपयोग हवन को अधिक सार्थक और प्रभावी बना सकता है। यदि इस परंपरा को प्रकृति के साथ जोड़कर देखा जाए, तो यह न केवल आध्यात्मिक शुद्धि प्रदान करेगी, बल्कि बिश्नोई समाज के पर्यावरण संरक्षण के मूल सिद्धांतों को भी मजबूत करेगी।

-सुमन बिश्नोई

सहायक प्रोफेसर

मनोहर मेमोरियल शिक्षण महाविद्यालय,

फतेहाबाद

मंत्र सिद्धि का रहस्यः मंत्रों को जागृत करने की प्रभावी विधि

आज हम बात करेंगे एक ऐसे विषय पर, जो हर आध्यात्मिक साधक के लिए महत्वपूर्ण है- 'मंत्र सिद्धि का रहस्यः कैसे करें मंत्रों को जागृत ?'

'मंत्र क्या है और क्यों होता है उनका जागरण ?'

दोस्तो, मंत्र वो शक्तिशाली ध्वनियां हैं, जो अपने भीतर दिव्य ऊर्जा को छुपाए रखती हैं। जब इन मंत्रों को सही तरीके से जपा जाता है, तो वे जागृत होकर अपनी अद्‌भुत शक्ति प्रकट करते हैं।

वेदों में कहा गया है- **'मननात् त्रायते इति मंत्रः।'** (जो मनन करने से रक्षा करता है, उसे मंत्र कहते हैं।) लेकिन मंत्र सिद्धि के लिए सिर्फ जप करना काफी नहीं है। इसके लिए आपको नियमितता, श्रद्धा और सही विधि का पालन करना होगा।

'जप करो दिन-रात लगातार,
श्रद्धा से मंत्र को समझकर।
एक दिन ऐसा जरूर आएगा,
मंत्र जागे और खुलेगा द्वार।'

मेरा अनुभव है: विचार है जो मैं आपके सामने रख रही हूं। मैंने कई साधकों को देखा है, जो मंत्रों को बिना समझे-बुझे जपते रहते हैं, लेकिन कोई फल नहीं मिलता। इसका कारण यह है कि वे मंत्र की ऊर्जा को जागृत करने के नियमों का पालन नहीं करते। मंत्र सिद्धि के लिए निम्नलिखित चीजें बहुत महत्वपूर्ण हैं-

1. **शुद्ध मनः**
❖ मंत्र की शक्ति को प्राप्त करने के लिए सबसे पहले आपका मन शुद्ध होना चाहिए। क्रोध, ईर्ष्या, और लोभ से मुक्ति पानी चाहिए।

2. **गुरु की दीक्षाः**
❖ एक योग्य गुरु से मंत्र की दीक्षा लेना बहुत जरूरी है। गुरु के आशीर्वाद से ही मंत्र की ऊर्जा जागृत होती है।

3. **नियमित जपः**
❖ रोजाना निश्चित समय पर मंत्र का जप करें। जप की संख्या नियमित रहनी चाहिए।

4. सही स्थान और समयः
❖ मंत्र जप के लिए शुद्ध और शांत स्थान चुनें। ब्रह्ममुहूर्त (प्रातः 4 बजे से 6 बजे) सबसे शुभ समय माना जाता है।

5. **'इष्ट देव की पूजाः'**
❖ जिस देवता से मंत्र जुड़ा है, उनकी पूजा करने से मंत्र की शक्ति बढ़ती है।

मंत्र जागृति के लक्षणः

जब मंत्र जागृत होता है, तो आपको इन लक्षणों का अनुभव हो सकता है ।

❖ मन में शांति और आनंद का अनुभव।
❖ जप करते समय शरीर में सूक्ष्म कंपन महसूस होना।
❖ सपनों में दिव्य दृश्य दिखाई देना।
❖ जीवन में सकारात्मक परिवर्तन आना।

उदाहरण के लिए, 'ॐ नमः शिवाय' का जप करने वाले लोगों को अक्सर शिवजी का दर्शन या उनकी ऊर्जा का अनुभव होता है।

'मंत्र सिद्धि का रहस्य आपकी श्रद्धा, नियमितता, और आत्मिक साधना में छिपा है। जैसा कि श्रीमद्‌भगवद् गीता में कहा गया है'-

'अनन्याश्चिन्तयन्तो मां ये जनाः पर्युपासते।'
'तेषां नित्याभियुक्तानां योगक्षेमं वहाम्यहम्।'

(जो लोग एकाग्रचित्त होकर मेरी उपासना करते हैं, उनका कल्याण मैं स्वयं करता हूँ।)

तो, श्रद्धा के साथ मंत्र जप करें और अपने जीवन को दिव्य ऊर्जा से भर दें।

-**सुनीता तलवाड**, प्रवक्ता
एम.एम. कॉलेज ऑफ एजुकेशन, फतेहाबाद

blfy, ugh :d ik jgh f'kdkj dh ?kVuk,

हमारे धर्म शास्त्र ही नहीं अपितु विज्ञान भी मानता है कि ईश्वर द्वारा रचित इस विविधता युक्त सृष्टि में पेड़-पौधे और जीव जंतुओं के बिना इस धरती पर हमारा जीवन संभव नहीं है, इसलिए वृक्षों और इन पर आश्रित वन्यजीवों की सुरक्षा हेतु गुरु जंभेश्वर भगवान ने अपने धर्म नियमों में विशेष जोर दिया, जिसके कारण आज हमारा समाज इनकी सुरक्षा हेतु प्राण प्रण से प्रयास करता रहता है और कानून में भी वन्यजीवों के शिकार पर सजा का प्रावधान है, जिसे लागू करने की जिम्मेदारी सरकार और उसके वन विभाग की है।

लेकिन इसके बावजूद इनके विनाश की वारदातें इसलिए नहीं रूक पा रही है क्योंकि हम पेड़ों की सुरक्षा की बात तो करते हैं परंतु जब-जब पेड़ों और जानवरों पर संकट आते हैं तब हम इसके लिए एकजुट प्रयास करने की बजाय इनकी सुरक्षा की जिम्मेदारी सरकार पर डाल देते हैं, परंतु वोट परस्त सरकार भी जब हमें आपस में बंटे हुए देखती हैं तो वह अपनी जिम्मेदारी से पल्ला झाड़ती नजर आती है। इसलिए नये कड़े कानून बनाना तो दूर मौजूदा कानून की क्रियान्विति को भी जरूरी नहीं समझती क्योंकि वह जानती है कि यह समाज एकजुट नहीं है, हम यह तो चाहते हैं कि वन्यजीवों के शिकार रूके लेकिन कैसे रूके ? इस पर मिल बैठकर कहीं गंभीर चर्चा नहीं होती। यदि पूरा समाज एकजुट होकर पूरी तरह से ठान लें तो संबंधित अधिकारियों को कानून की पालना करवाने एवं सरकार को कड़े कानून बनाने हेतु बाध्य भी किया जा सकता है और यदि पूरा समाज एकजुट होकर यह ठान ले तो निश्चित रूप से सामाजिक दबाव बना कर इन शिकार और पेड़ों की कटाई की वारदातों को प्रभावी ढंग से रूकवाया भी जा सकता है।

जिसका प्रत्यक्ष ताजा उदाहरण हाल ही में बीकानेर के बज्जू क्षेत्र में घटित चिंकारा हिरण शिकार की वह चर्चित घटना है, जिसमें मोडिया फांटा निवासी साहसी वन्यजीव प्रेमी सुमित सांवक और ग्रामिणों ने सक्रिय होकर अदम्य साहस का परिचय देते हुए पुलिस के सहयोग से तुरंत शिकारियों को दबोचने में बड़ी सफलता हासिल की है और चिंकारा हिरण का शिकार कर जीपों में सवार बेतहाशा भागे जा रहे हथियारबंद पंजाब के दुर्दांत शिकारियों को पकड़वा पाना तब संभव नहीं हो पाता जब माणकासर सरपंच श्री जयसुखराम विश्नोई और बज्जू प्रधान पुत्र श्री सुरेशकुमार तेतरवाल बिश्नोई आदि ग्रामीण जन अपनी जान जोखिम में डालकर अपनी गाड़ियों से लगातार उनका पीछा नहीं करते।

अब उस घटना में दोनों जीपों पर सवार पंजाब से आये उन सातों शिकारियों को हथियारों सहित पकड़ तो लिया गया है, लेकिन यदि पूर्व की घटनाओं की ही तरह इस मामले में भी निष्पक्ष जांच एवं कोर्ट में पैरवी नहीं हो पाई तो कोई आश्चर्य नहीं कि ये शिकारी भी एक दिन कानूनी सजा से उसी तरह बच जाये, जैसे शिकारियों की गोली से शहीद शैतानसिंह भादू ननैऊ के हत्यारे कोर्ट से बरी हो गये थे। अतः समाज की सर्वोच्च संस्था अखिल भारतीय बिश्नोई महासभा को इस तरह के संगीन केसों में जिला स्तर पर एक-एक वकील खड़ा कर कानूनी लड़ाई लड़नी होगी।

अन्यथा ऐसे केसों में नीचे से लेकर ऊपर तक हावी हो चुके भ्रष्टाचार, संबंधित अधिकारियों की लापरवाही और लचीले कानून के कारण इन मुल्जिमों का भी बरी होना तय है। क्योंकि ऐसे केस कोर्ट में जाने पर उचित निगरानी के अभाव में शिकारियों का कानूनी सजा से बच पाना तय है। ऐसा इसलिए संभव होगा क्योंकि शिकार घटना पर सक्रियता दिखाने वाला हमारा समाज हर बार अदालती लड़ाई में उदासीन बना रहता है। जिसका लाभ उठाकर दोषी शिकारी आसानी से कानूनी सजा से बच जाता है।

यह मैं सुनी सुनाई बातों के आधार पर नहीं कह रहा हूं। बल्कि इस यथार्थ सच्चाई के मेरे पास सैंकड़ों पुख्ता सबूत है, जिन्हें कोई भी नहीं झुठला सकता। दोषी शिकारी कोर्ट से बरी इसलिए हो रहे हैं क्योंकि अक्सर शिकारी को पकड़वाने वाले पर्यावरण प्रेमी कानूनी दांव पेंचों से अनभिज्ञ होते हैं और सरकारी वकील भी लोभ वश उनकी पैरवी नहीं करते। जिसके कारण मुल्जिम पक्ष का शातिर वकील अपने मुवक्किल को आसानी से कानूनी सजा से बचा ले जाता है।

अतः इस लेख के माध्यम से मेरा महासभा और समाज के हित चिंतक सभी अग्रगण्य महानुभावों न्यायविदों, शिक्षकों, संतों एवं बुद्धिजीवियों से विनम्र अनुरोध है कि वे मिल-बैठकर शिकार प्रभावित क्षेत्रों में जिला स्तर पर एक ऐसा वकील नियुक्त करवायें जो शिकारियों को कानूनी सजा से बचाने वाली तमाम कुचालों को ध्वस्त कर उन्हें दंडित करवा सके। अन्यथा शिकारियों को पकड़वा देने मात्र से ही शिकारियों को दंडित करवा पाना संभव नहीं हो पायेगा। अतः समाज के शुभचिंतक सभी महानुभावों से नम्र निवेदन है कि वे इस संबंध में गंभीरता से विचार कर उचित निर्णय लेवें, ताकि वन्य जीवों के शिकार की घटनाओं को प्रभावी ढंग से रोका जा सके।

-रामकिशन डेलू, महासचिव
जीव रक्षा संस्था, बीकानेर
मो.9414547458

सबदवाणी सूक्तियाँ

❖ **जे थे गुरु का शब्द मानीलो, लंघिबा भव जल पारूं।**

(सबद 96)

यदि तुम सतगुरु के बताए हुए रास्ते पर चलोगे और उनके उपदेशों व बताई हुई युक्ति पर चलोगे तो इस संसार सागर से पार हो जाओगे।

❖ **तेरी कुड़ काची लगवाड़ घणो छे, कुशल किसी मन भाई।**
हिरदै नाम विष्णु को जंपो, हाथे करो टवाई।

(सबद 97)

हे प्राणी, तेरा यह शरीर तो नश्वर है परन्तु झूठी मोहमाया में फंसने के कारण काम, क्रोध, लोभ, मोह व अहंकारवश तूने अपने पीछे तेरा-मेरा, अपना-पराया, लाभ-हानि, दुख-सुख जैसे कई प्रकार के लगाव लगा लिए हैं, झंझट पाल लिए हैं। यदि इतने झंझट रहेंगे तो फिर जीव की कुशलता कैसे रहेगी क्योंकि इन झंझटों के कारण तुझे ईश्वर को स्मरण करने का समय ही नहीं मिलेगा और न ही तू ईश्वर का ध्यान कर सकेगा। इसलिए हे प्राणी तू हृदय के अन्दर हरि विष्णु के नाम का जाप कर और अपने हाथों से परिश्रम करके हक और न्याय की कमाई करना।

❖ **जीवत मरो रे जीवत मरो। जिन जीवन की बिध जाणी।** (सबद 98)

हे प्राणी, तू जीवित अवस्था में ही मुक्ति प्राप्त करले। जीवित अवस्था में मुक्ति प्राप्त करना ही जीवन विधि, जीने की कला है। जीते जी यदि कोई अपने अन्दर बसे हुए मारने लायक शत्रुओं (काम, क्रोध, लोभ, मोह व अहंकार) को मार देता है, उनको जीत लेता है तो समझो उसने जीवन की
विधि जान ली है।

❖ **ओ३म् नितहीं मावस नित संकराति, नितहीं नवग्रह वैसे पांति।**
नितही गंग हिलोले जाय, सतगुरु चीन्हे सहजै न्हाय।

(सबद 101)

अमावस, संक्राति, नौ ग्रह आदि का निश्चित काल होता है जिनमें उपवास व दान इत्यादि किए जाते हैं। परन्तु जो पुरुष ईश्वर की उपासना में हर वक्त तल्लीन रहता है और श्वासो-श्वास ईश्वर का ही स्मरण करता है और जिसने सतगुरु की पहचान कर ली है उसके लिए अमावस्या संक्रांति आदि एक समान हैं। वह तो नित्य ही गगनमण्डल की अमृतधारा में सहज रूप से ही स्नान करता है। इसलिए किसी सुपात्र को दान देने के लिए सारे दिन ही बराबर हैं।

❖ **जोय जोय नांव विष्णु के दीजै, अनन्त गुणा लिख लीजै।** (सबद 103)

भगवान विष्णु को साक्षी समझ कर, उनको अर्पण करके सुपात्र को जो कुछ भी दान पुण्य किया जाता है, उसके गुण तो अनन्त हैं। वह दान भविष्य में दान देने वाले के खाते में अनन्त गुणा करके लिख दिया जाता है।

❖ **भूला लो भल भूलालो, भूला भूल न भूलूँ।**
जिहिं ठूंठड़िये पान न होता, ते क्यूं चाहत फूलूँ।

(सबद 109)

हे भूले हुए प्राणी, तू बार-बार भूल मत कर और भूल को दोहराना मत। भूल पर भूल मत कर अज्ञान में पड़कर पाखंड और झूठ कपट में मत पड़। ऐसी भूल मत कर क्योंकि पाखंडी तो सूखे हुए ठूंठ के समान है उससे पत्ते व फल-फूल की आशा या चाहत मत कर।

❖ **चांदणै थकै अंधेरै क्यूं चालो, भूल गया गुरु बाटो।**
नीर थक घट थूल क्यूं राखो, सबल बिगोवो खाटो।

(सबद 114)

प्रकाश के होते हुए भी अन्धेरे में क्यों चलते हो? गुरु का बताया रास्ता क्यों भूल गये हो? जल के होते हुए भी अपने घड़े को खाली क्यों रखते हो? घी की आशा में बल लगाकर छाछ को क्यों बिलो रहे हो? अर्थात् ज्ञानामृत की वर्षा में भी अज्ञानी क्यों रहते हो? ज्ञान रूपी प्रकाश के होते हुए अज्ञानान्धकार में क्यों रहते हो और झूठकपट और पाखंड का खेल क्यों

खेलते हो? इससे सारतत्व की प्राप्ति नहीं हो सकती।

❖ **जोग जुगत की सार न जाणी, मूंड मुंडाय बिगूता।**
(सबद 117)

योग तथा युक्ति का महत्व और योगसाधना के बारे में तो तुम कुछ भी नहीं जानते और योगी जैसा भेस बना लिया है। मुंह या सिर मुंडाने से अथवा जटा बढ़ाने मात्र से कोई योगी नहीं बन जाता। जब तक अन्तःकरण में ज्ञान, ध्यान, साधना नहीं है तब तक योगी जैसी ऊपरी वेशभूषा से तो अविश्वास की स्थिति में ही जीवन व्यतीत होता है।

❖ **प्रह्लादा सूं वाचा कींवी, आयो बारां काजै।**
(सबद 48)

मैंने भक्त प्रह्लाद को उसके तैंतीस करोड़ अनुयायिओं के उद्धार का वचन दिया था। अब तक तीन युगों में इक्कीस करोड़ तो पार कर दिए। अब शेष बारह करोड़ों के उद्धार का काम करने आया हूं।

❖ **ओ३म् विष्णु विष्णु तू भण रे प्राणी, पैंके लाख उपाजूं।** (सबद 49)

हे प्राणी तू विष्णु के नाम की पूजा कर, स्मरण कर। जिस प्रकार पाई-पाई जोड़ कर लाखों रुपये इकट्ठे हो जाते हैं। उसी प्रकार निरंतर विष्णु भगवान का नाम स्मरण करने, जप करने से पुण्यों का खजाना भी भर जाएगा।

❖ **विष्णु विष्णु तू भणरे प्राणी, इस जीवन के हावै।**
क्षण क्षण आव घटती जावै, मरण दिनों दिन आवै।
(सबद 120)

हे प्राणी, जब तक तेरी देह में प्राण हैं और जब तक तेरा जीवन है तू 'ओ३म् विष्णु' महामन्त्र का ही जाप कर। तेरी आयु प्रतिक्षण घटती जा रही है और प्रतिदिन तेरी मृत्यु पास आती जा रही है। मरणोपरांत कुछ नहीं होगा। इसलिए यह जीवन रहते रहते ही 'ओ३म् विष्णु' का जाप कर लेना चाहिए।

-बनवारी लाल बिश्नोई, एडवोकेट
पूर्व निदेशक, अभियोजन विभाग, हरियाणा
मो. 94672-97883

दृष्टि दे तू ज्ञान की

करूं ध्यान तेजस रूप का,
धरूं हृदय में विग्रह तेरा।
करूं कर्म मैं होकर विलग,
यह चरण में आग्रह मेरा॥

मेरे पास बस तुम ही रहो,
मेरे साथ बस तुम ही चलो।
तुम स्वयं परंतप रूप हो,
तुम विजय का स्वरूप हो॥

मेरे कर्मों में आवेग दो,
दुर्बलता अब निस्तेज हो।
अखण्ड हो श्रद्धा मेरी,
हो धर्म में रूचि मेरी॥

दृष्टि दे तू ज्ञान की,
शक्ति दे विज्ञान की।
रहूं रत सदा धर्म में,
स्थिति दे निर्वाण की॥

करूं चरण वंदन माँ तेरा,
अज्ञान हर लो तुम मेरा।
जीवन को तुम अर्थ दो,
शरण है यह सुत तेरा॥

-पंकज कुमार बिश्नोई
कृष्णापुरम, मन्डावर रोड,
बिजनौर (उत्तर प्रदेश)
मो.: 9411847046, 975887702

...पर दोषी कौन?

मेरी, मेरी आत्महत्या पर,
दोषी कौन ?
सवाल है हजारों,
पर अन्त समय,
सब में कौन ?
घर संसार
घर में है दुश्मन,
पर दोषी कौन ?
अन्तिम समय में,
सब हैं मौन ॥
जीवन इतना क्यों हो जाता है भारी ?
क्यों बाहर जा रही है ?
घर से घर की चारदीवारी,
कहीं ना कहीं तो है,
इसमें दोष भारी,
जीवन रेखा में इतनी लाचारी !
कितनी हत्यारी ! हस्तरेखा हमारी,
कहीं ना कहीं तो है,
हमारी भागीदारी,
बहाव के विपरीत,
चलने की तैयारी,
क्या है अन्दर ?
हमारे कौन-सी जल रही चिंगारी ?
क्यों हम अंगारों पर चल रहे ?
क्यों हम अपने आप में बस जल रहे ?
सवाल हजारों,
पर जाने कौन ?
मेरी आत्महत्या पर,
दोषी कौन ?
जो हम हैं वह न होकर,
हर पल जीवन में है ठोकर,
हर एक दिन नया जन्म है,
जब हम सुबह उठें सोकर,
आशामय जीवन
कभी हमें छोड़ना नहीं चाहिए।
जीवन एक रेशमी धागा है,
इसे अपने हाथों से कभी,
तोड़ना नहीं चाहिए।
यह देह अपने आप,
ठंडी होने दें,
चिंता को कभी
चिता की अग्नि से,
जोड़ना नहीं चाहिए।
मेरी आत्महत्या बस
मेरा ही मौन,
सवाल है हजारों,
पर दोषी कौन ?
है समस्या जहां से,
है समाधान भी वहां से,
कौन जाने कितने आए ?
कितने चले गए यहां से,
निकाल फेंके हम जहर,
बाहर अपने मन का,
जो अकाल दुश्मन है।
हमारे इस ईश्वरीय तन का,
रूप बसंत भी यहां है,
संगमरमर भी यहां,
है पर तय तो हमें करना है
हमें जाना कहां ?
पर विधि का विधान,
जाने कौन ?
बस सहज स्वीकार उसकी डोर
मेरी आत्महत्या,
मेरा ही मौन,
सवाल है हजारों,
पर जाने कौन ?

-हरि सिंह
गांव मंगाली मोहब्बत, जिला हिसार

बिश्नोई युवकों को विज्ञान की शिक्षा क्यों आवश्यक है?

बिश्नोई समाज, जिसकी पहचान प्रकृति, पर्यावरण और जीव-जंतुओं के प्रति अपार प्रेम और निष्ठा से होती है, समय के साथ प्रगति की दिशा में कदम बढ़ा रहा है। यह समाज अपने 29 नियमों के माध्यम से पर्यावरणीय संरक्षण और मानवीय मूल्यों का पालन करता है। वर्तमान युग विज्ञान और तकनीकी विकास का है, और बिश्नोई समाज के युवकों के लिए विज्ञान की शिक्षा न केवल उनकी संस्कृति और परंपराओं को सशक्त बनाने का माध्यम बन सकती है, बल्कि यह उन्हें समाज और देश के विकास में बड़ी भूमिका निभाने का अवसर भी प्रदान करती है। बिश्नोई युवकों को विज्ञान की शिक्षा क्यों आवश्यक है ?

1. पर्यावरण संरक्षण में योगदान

बिश्नोई समाज का मुख्य उद्देश्य पर्यावरण और जीव-जंतुओं की रक्षा करना है। विज्ञान की शिक्षा प्राप्त कर, बिश्नोई युवा पर्यावरण संरक्षण के क्षेत्र में नए शोध कर सकते हैं, नवीन तकनीकों का विकास कर सकते हैं, और वैश्विक मंच पर पर्यावरणीय मुद्दों पर अपनी आवाज बुलंद कर सकते हैं।

2. सामाजिक नेतृत्व और भूमिका

विज्ञान के क्षेत्र में दक्षता से बिश्नोई युवा समाज के लिए प्रेरणा स्रोत बन सकते हैं। विज्ञान और तकनीकी ज्ञान से लैस युवा अपने समुदाय को स्वास्थ्य, स्वच्छता और कृषि सुधार जैसे महत्वपूर्ण क्षेत्रों में मार्गदर्शन दे सकते हैं।

3. सांस्कृतिक धरोहर का संरक्षण

बिश्नोई समाज की परंपराएं और आदर्श विज्ञान और प्रकृति के साथ गहराई से जुड़े हैं। आधुनिक विज्ञान की शिक्षा से युवा इन परंपराओं का वैज्ञानिक आधार समझ सकते हैं और इन्हें और प्रभावी ढंग से प्रचारित कर सकते हैं।

4. आधुनिक समस्याओं का समाधान

जलवायु परिवर्तन, जैव विविधता के नुकसान, और प्राकृतिक संसाधनों के अंधाधुंध दोहन जैसी समस्याओं का सामना करने के लिए बिश्नोई युवकों को विज्ञान की शिक्षा प्राप्त कर समाधान ढूंढने में अग्रणी भूमिका निभानी चाहिए।

विज्ञान की शिक्षा से बिश्नोई युवकों को मिलने वाले लाभ

1. कृषि और जल संरक्षण में सुधार

विज्ञान और तकनीकी शिक्षा से युवा उन्नत कृषि पद्धतियों, जल संरक्षण तकनीकों और जैविक खेती को बढ़ावा दे सकते हैं। यह न केवल उनकी आजीविका को सुधारने में मदद करेगा, बल्कि समाज की प्राचीन परंपराओं को भी जीवित रखेगा।

2. स्वास्थ्य और चिकित्सा क्षेत्र में योगदान

विज्ञान की शिक्षा प्राप्त कर बिश्नोई युवा चिकित्सा के क्षेत्र में नई खोज कर सकते हैं। वे ग्रामीण क्षेत्रों में स्वास्थ्य सेवाओं को बेहतर बनाने और पारंपरिक उपचार पद्धतियों को वैज्ञानिक मान्यता दिलाने में मदद कर सकते हैं।

3. पर्यावरणीय जागरूकता बढ़ाना

पर्यावरण विज्ञान में शिक्षा प्राप्त कर, बिश्नोई युवा समाज को जागरूक बना सकते हैं और पर्यावरणीय मुद्दों पर वैश्विक स्तर पर ध्यान आकर्षित कर सकते हैं।

4. तकनीकी विकास और नवाचार

बिश्नोई समाज के युवा तकनीकी विकास में योगदान देकर नई परियोजनाओं और उत्पादों को विकसित कर सकते हैं, जो समाज और प्रकृति के बीच सामंजस्य बनाए रखने में सहायक होंगे।

बिश्नोई युवकों को विज्ञान की शिक्षा के लिए प्रेरित करने के उपाय

1. गुरु जम्भेश्वर के विचारों का वैज्ञानिक दृष्टिकोण से प्रचार

गुरु जम्भेश्वर द्वारा दिए गए 29 नियमों में

पर्यावरण और मानवता के प्रति जो निर्देश दिए गए हैं, उनका वैज्ञानिक आधार प्रस्तुत करना बिश्नोई युवकों को विज्ञान की ओर आकर्षित कर सकता है।

2. प्रेरणादायक उदाहरण

बिश्नोई समाज के युवा उन वैज्ञानिकों और शोधकर्ताओं से प्रेरणा ले सकते हैं, जिन्होंने पर्यावरण और समाज के क्षेत्र में बड़ा योगदान दिया है। समाज के भीतर से ऐसे रोल मॉडल तैयार करना आवश्यक है, जो विज्ञान और शिक्षा के क्षेत्र में प्रगति कर रहे हों।

3. शिक्षा के अवसर प्रदान करना

बिश्नोई समाज के बच्चों और युवाओं को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा उपलब्ध कराने के लिए विशेष प्रयास करने चाहिए। इसके तहत छात्रवृत्तियां, शिक्षण संस्थानों में आरक्षण, और विज्ञान विषयों की पढ़ाई के लिए प्रेरणात्मक कार्यक्रम आयोजित किए जा सकते हैं।

4. विज्ञान और प्रकृति के संबंध पर जोर

युवाओं को यह समझाना आवश्यक है कि विज्ञान और प्रकृति परस्पर विरोधी नहीं हैं, बल्कि एक-दूसरे के पूरक हैं। विज्ञान की शिक्षा प्राप्त कर वे प्रकृति और पर्यावरण को बेहतर तरीके से संरक्षित कर सकते हैं।

5. कार्यशालाएं और सेमिनार आयोजित करना

विज्ञान और प्रौद्योगिकी के विभिन्न विषयों पर कार्यशालाएं और सेमिनार आयोजित किए जाने चाहिए। इसमें बिश्नोई समाज के युवकों को भाग लेने का अवसर दिया जाए, जिससे वे नई तकनीकों और विचारों से अवगत हो सकें।

6. पर्यावरणीय शोध केंद्रों की स्थापना

बिश्नोई समाज के युवाओं को प्रेरित करने के लिए पर्यावरणीय शोध केंद्र स्थापित किए जा सकते हैं, जहां वे विज्ञान के क्षेत्र में अनुसंधान कर सकें।

7. सफल व्यक्तियों की कहानियां साझा करना

बिश्नोई समाज के उन लोगों की कहानियां साझा करनी चाहिए, जिन्होंने विज्ञान और पर्यावरण के क्षेत्र में सफलता हासिल की है। यह युवाओं को प्रेरित करेगा और उन्हें नई दिशा देगा।

निष्कर्ष

बिश्नोई समाज का इतिहास प्रकृति और पर्यावरण की सेवा का रहा है। आज के युग में, विज्ञान की शिक्षा इस सेवा को नई ऊंचाइयों पर ले जा सकती है। बिश्नोई युवकों को विज्ञान और तकनीकी शिक्षा में पारंगत होने की आवश्यकता है, ताकि वे समाज और देश के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकें।

गुरु जम्भेश्वर के आदर्श और बिश्नोई समाज की परंपराएं विज्ञान की शिक्षा से और अधिक प्रासंगिक हो जाएंगी। विज्ञान की शिक्षा न केवल उन्हें व्यक्तिगत और सामाजिक रूप से सशक्त बनाएगी, बल्कि यह उनकी परंपराओं और आदर्शों को आधुनिक संदर्भ में नए अर्थ प्रदान करेगी। बिश्नोई युवकों को इस दिशा में कदम बढ़ाने के लिए प्रेरित करना समाज के उज्ज्वल भविष्य के लिए एक अनिवार्य पहल है।

-राघव
बी.टेक. विद्यार्थी, हकृवि हिसार
मो.: 7206283166

20वां स्थापना दिवस आयोजित

पंचकुला: 25 मार्च 2025 को बिश्नोई भवन/मन्दिर, पंचकुला का 20वां स्थापना दिवस बड़ी धूमधाम से मनाया गया। बिश्नोई सभा पंचकुला आए हुए सभी धर्मप्रेमी सज्जनों का कार्यक्रम में शामिल होने और स्थापना दिवस के कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए हार्दिक आभार व्यक्त करती है।

-एल.आर. गोदारा
प्रधान एवं समस्त सभासद, बिश्नोई सभा पंचकुला

बिश्नोई समाज के प्रमुख धाम

जाम्भाणी पर्व एवं अमावस्या

सम्वत् 2082 ज्येष्ठ की अमावस्या

लगेगी– 26.05.2025 सोमवार दिन में 12 बजकर 12 मिनट पर
उतरेगी– 27.05.2025 मंगलवार प्रात: 8 बजकर 32 मिनट पर

सम्वत् 2082 आषाढ़ की अमावस्या

लगेगी– 24.06.2025 मंगलवार सायं 7 बजकर 00 मिनट पर
उतरेगी– 25.06.2025 बुधवार सायं 4 बजकर 02 मिनट पर

RNI No. : 12406/57
POSTAL REGD. NO. : L/RNP/01/HSR/2023-25
TECH/WPP/HR-04/HISAR/2023-25

POSTAGE PREPAID IN CASH
POSTED AT : HISAR H.O.
POSTING DATE : 1st OF EVERY MONTH

श्री गुरु जम्भेश्वर मन्दिर

पंचकूला (हरियाणा)

मुद्रक, प्रकाशक जगदीश चन्द्र कड़वासरा, प्रधान, बिश्नोई सभा हिसार ने डोरेक्स ऑफसेट प्रिंटर्स, हिसार से बिश्नोई सभा, हिसार के लिए मुद्रित करवाकर 'अमर ज्योति' कार्यालय, श्री बिश्नोई मन्दिर, हिसार से दिनांक 1 मई, 2025 को मुख्य डाकघर, हिसार से प्रेषित किया।

DOREX® Printers 9896011117